भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 22 | उदयपुर गुरूवार 01 दिसंबर 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लेखन का प्रभाव किस रूप में कहां-कहां!

कोई क्यों लिखता है ? किसके लिए लिखता है ? लिखने से क्या होता है ? ऐसे प्रश्न लेखकों के सामने अक्सर आते हैं। लोग पूछते ही हैं पर लेखक स्वयं भी सोचता रहता है और उत्तर भी उसके मन में आता होगा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी ने 'पंचवटी' में लिखा भी है-

कोई कुछ नहीं कहने पर भी जन-मन मौन नहीं रहता।
आप आपकी सुनता है वह आप आपसे है कहता।।

मनीषियों ने तो यह भी कहा है कि नया कुछ नहीं रचा जा रहा है। सब कुछ रचा हुआ है। मात्र उसकी पुनर्रचना हो रही है। पुनर्लेखन हो रहा है। फर्क सिर्फ समझ-समझ का है। प्रसादजी ने 'कामायनी' के पहले छन्द में ही लिख दिया-

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह।
एक पुरुष भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलह प्रवाह।।
नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था, एक सघन।
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।।

चतुरसिंहजी बावजी ने लिखा-

रेंट चले चरख्यो चले, पण चलवा में फेर।
ओ तो बाग हर्‌यो करे, वो छूंतां को ढेर।।

चलते दोनों हैं, कुए-बावड़ी से पानी निकालने वाला रंहट और गन्ने से रस निकाल गुड़ बनाने वाला चरख्या किन्तु उनके चलने-चलने में फर्क है। ये बातें सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर है।

लेखक और लेखन की भी कई श्रेणियां हैं। सबके अपने-अपने नजरिये हैं। देखन को छोटा लगे, घाव करे गम्भीर भी है और देखन को मोटा लगे, भाव न मारे मीर भी। तुलसीदास होते तो उनसे पूछते कि उन्होंने ढोर गंवार शुद्र पशु नारी को 'ताड़न' के अधिकारी लिखा कि 'तारन' के! अन्धे का नाम नैनसुख और करोड़ीमल ताजीवन भीखमंगा ही रहा। बाहर से अन्धे पर भीतर से द्रष्टा सूरदास ने लिखा- 'बहरो सुने, मूक पुनि बोले, रंक चले सिर छत्र धराई।' ढपली एक, पर रागें अनेक देती सबने सुनी हैं। अस्तु।

मूठ फेंकने वाला; मूठ को झेलने, थामने, ठहरा देने तथा वापस करने का भी जानकार होता है। मूठ एक अनिष्टकारी विद्या है जिसका नाम सुनते ही रोम-रोम मरा-मरा हो उठता है। भयावनी अकाल मृत्यु दिखाई देती है। 'मूठ मारो या सात पीढ़ी तारो' जैसी कहावत के साथ घृणा और हेय दृष्टि जुड़ी हुई है।

मूठ का बणज करने वाला कभी फलाफूला नहीं है। उसकी मौत कुत्ते की मौत से भी गईबीती समझी गई है। फिर भी लोग हैं कि जरा-जरा सी बात पर अपने दुश्मनों को मूठ द्वारा अगत मौत देकर ही दम लेते हैं। इसके तीन सौ साठ प्रकार माने जाते हैं। यह असुर साधना है।

यहां मैं बम्बई से प्रकाशित साप्ताहिक 'धर्मयुग' में छपे अपने लेख 'मरदां वाली मूठ : लूट सके तो लूट' का उल्लेख करना चाहूंगा। 30 अगस्त 1981 को छपे मेरे इस लेख से प्रभावित तीन व्यक्तियों का जिक्र करना चाहूंगा।

(1) पत्र पढ़कर हर्ष हुआ। अति धन्यवाद। यह नागपुर से किन्हीं रामभरोसे (छद्म नाम) का 11 अक्टूबर 1981 का पत्र है। इसमें लिखा कि उनकी पत्नी को कोई प्रेतबाधा है। वे दीवाली को बहेड़ी मियां अब्दुल समदजी के पास जा रहे हैं। वहां पहले भी इलाज हो चुका है। वे मरीज को अंधेरे कमरे में पानी पिलाकर जोर-जोर से सांस बाहर फेंकने को बोलते हैं जिससे भूत-प्रेत बाहर निकल बोलने लगता है। मरीज को कोई तकलीफ नहीं होती फिर भी भूत पकड़ में अभी तक नहीं आ रहे हैं। श्री सरजुदासजी का इलाज करने का तरीका लिखें जिससे पता चले कि मरीज को इलाज के समय तकलीफ तो नहीं होती।

जवाब : इससे पूर्व जो पत्र लिखा वह मेरे पास नहीं है पर उसके उत्तर में मैंने लिखा कि रोगी को हल्के रंग की नीलम की, बीच की अंगुली में अंगूठी पहना दें। 21 दिन तक प्रतिदिन सुबह एक सेव खिलायें तथा आना चाहें तो 14 जनवरी को आ जायें ताकि लोकदेवता कल्लाजी की गादी पर समस्या का समाधान हो सके।

(2) यह पत्र 07 जून 1986 का किन्हीं जीरोलाल (छद्म नाम) का उनावा (मेहसाना) का लिखा है। वे लिखते हैं- 'पन्द्रह वर्ष पूर्व बड़े भाई की जिस लड़की से शादी हुई वह डाकण थी जिसने हमारे घर को बर्बाद करते भाई को खत्म कर दिया। अब मां-बहिन के पीछे पड़ी है। हमने उसे छोड़ दिया। वह बिल्ली बन घर के चक्कर लगाती रहती है।

मैं इंजीनियर हूं। नौकरी छोड़ दी। मां-बहिन की आंखें खराब और मैं सालभर से सूखता जा रहा हूं। पैरों में दर्द से चल नहीं सकता। आपके लेख में मूठ में माहिर देवी-उपासक भोपे तथा उस्ताद गुगर्‌या बाबा के दो फोटो भी देखे।

मैं यथाशक्ति पैसे खर्च करने को तैयार हूं। यहां दरगाह में रह रहे पर कोई खास आराम नहीं। उदयपुर आऊंगा तब पूरी कहानी सुनाऊंगा। आपने शोधयात्राओं में पूरा राजस्थान घूमा है और जादू-टोना मंतर मूठ के लोगों को जानते हैं। किसी अच्छे से मिलवा देंगे तो हमारी जिन्दगी बच जाएगी वर्ना मुझे तो अपनी मौत ही नजर आती है। आप मुझे निराश नहीं करेंगे।'

जवाब : मैंने 12 जून 1986 को पत्र लिखा। याद पड़ता है, कल्लाजी का भाव आने वाले सेवक सरजुदासजी को गादी पर वह पत्र पढ़कर सुनाया और एक पुड़िया में थोड़ी सी भभूत तथा एक लच्छे का मंत्रित डोरा लिफाफे में भेजा।

(3) कुछ याद नहीं कि वह व्यक्ति किस नाम का तथा कहां का था पर बड़ा मोटा तगड़ा प्रभावी व्यक्तित्व लिये था। उसके हाथ में मेरा लेख छपा धर्मयुग था। पूछता-पूछता दो-तीन मेडिकल डाक्टर्स से मिल मेरा पता जानना चाहा पर उसे निराशा हाथ लगी फिर सूरजपोल स्थित गोयल ब्रदर्स के श्री सुरेशजी गोयल ने एक टेम्पो में बिठाकर मेरे पास भारतीय लोककला मण्डल भेज दिया।

कलामण्डल में आकर उसने पूरा वृतांत बताया कि वह बहुत बड़े मठ का स्वामी था पर लोगों ने पीछे पड़कर उसे वहां से हटाकर बुरी तरह बर्बाद कर दिया। अब मैं चाहता हूं कि मूठ विद्या से उनकी ऐसी तैसी कर अपनी जायदाद अपने कब्जे में करूं। इसमें आप ही मेरी सहायता कर सकते हैं।

मैंने सारी बातें ध्यान से सुनी और कहा, मैं स्वयं कोई समझू नहीं हूं। टोने-टोटके करने वाला इन्सान कभी नहीं रहा। लिखने की दृष्टि से अनेक लोगों से पूछताछ कर यह लेख लिखा है। ऐसी नकारा विद्या से आपको भी परहेज करना चाहिये और सबके कल्याण की सोच और तदनुसार व्यवहार करने से ही व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है। उसको मेरी कोई बात असरकारी नहीं लगी। संध्या को भी वह मेरे साथ ही मेरे निवास पर आया। नीचे का निवास तब खाली था सो वहां उसे ठहरा दिया।

रात को भी उसने मेरा पीछा नहीं छोड़ा और मेरे प्रति वह कठोर बनता गया। मैंने कोई परवाह नहीं की। न उससे भयभीत ही हुआ पर देखते-देखते उसे अचानक दस्तें लगनी शुरू हो गई और से वह निढ़ाल हो गया। सुबह मैंने अपने एक समधी को फोन पर सारी घटना कह सुनाई और उसे उनके पास यह कहकर भेज दिया कि वे मंत्र-तंत्र करते हैं सो कोई उपाय बतादेंगे। आपकी समस्या हल हो जाय, ऐसी प्रार्थना मैं भी अपने देवता से करूंगा।

यह बात सच थी पर समधीजी रोगी को निरोगी करने का झाड़ा फूंखा करते थे। फिर पता नहीं उस व्यक्ति का क्या हुआ। उन्होंने भी यही बताया कि उसे संतुष्ट कर विदा कर दिया।

धर्मयुग के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मवीर भारती जब उदयपुर महाराणा मेवाड़ का हल्दीघाटी पुरस्कार लेने आये तब बताया कि मूठ वाले लेख को प्रकाशित करने; नहीं करने का सोच निरन्तर चलता रहा।

सोचा कि इससे अंधविश्वास फैलेगा पर यह भी विचार बना कि लिखा बड़ा सटीक है और लोगों में यह बुरी तरह असरकारी भी होगा। छापने का साहस किया लेकिन इसे पढ़कर जब पाठकों की ढेर सारी प्रतिक्रिया आई तो बड़ा आश्चर्य हुआ। ऐसा पहलीबार ही हुआ कि किसी लेख पर सर्वाधिक पाठकों के पत्र मिले तो हमने लोकजीवन में व्याप्त ऐसे विचित्र और अजूबे प्रसंगों पर वर्ष में एकबार विशेषांक प्रकाशित करने का ही मन बना लिया। फिर तो मेरे चित्तौड़ के किले पर भूतों का मेला और बैकुण्ठ चतुर्दशी को लगने वाला दिव्य आत्माओं का मेला जैसे लेख भी धर्मयुग ने बड़ी तसल्ली से छापे।

वह चाय चम्मच से हिलाते-हिलाते

1997 के जून महीने की बात है जब मैं उदयपुर के राजस्थान विद्यापीठ की घटक संस्था साहित्य संस्थान में नौकरी करता था। उस समय डॉ. मोतीलाल मेनारिया हमारे निदेशक थे।

दिन को दो बजे करीब हमारी चाय बनती थी। पीने वाले हम पांच व्यक्ति थे सो पांच ही कप चाय बनती थी। चपरासी मेघराज ने चाय बना हमारे सम्मुख रख दी। एक कप डॉ. मेनारिया साहब को उनके कक्ष में पहुंचाना पड़ता था। उस दिन मेघराज ने कहा कि डाक्टर साहब की चाय में ऊपर से एक चम्मच अतिरिक्त डालने वाली शक्कर समाप्त हो गई है। हम सोच में पड़ गये। बाजार से शक्कर लाने में देर लगेगी तब तक चाय ठण्डी हो जायेगी सो हमने तै किया कि सदैव की तरह चाय को चम्मच से हिलाते दे आओ।

मेघराज सहमता-सहमता बेमन गया और चाय रख आया। कुछ देर बाद गया तो खाली कप ले आया। डॉक्टर साहब ने उसे कुछ नहीं कहा। कहा तो सिर्फ यही कि आज की चाय कुछ अलग से थी। उसमें कुछ डाला था क्या?

मेघराज मुस्कराता हुआ आया और बोला, आप लोगों का अन्दाज ठीक ही रहा। डॉक्टर साहब ने अच्छी से चाय पी ली और चाय की प्रशंसा की।

डॉ. मेनारिया समय के पक्के पाबन्द थे। साहित्य संस्थान में सेवानिवृत्ति के बाद उनका समय 12 से 3 बजे तक का था। एक दिन वे मुझे साहित्य संस्थान की सीढ़ियों पर बैठे मिले। उन्हें अचानक देख मैं हक्का-बक्का हो गया। मैंने पूछा, 'आप यहां कैसे?' वे अपनी घड़ी देख बोले, 'अभी दो मिनिट शेष हैं। मेरा समय ठीक 12 बजे से है।'

इसी प्रकार एकदिन विद्यापीठ के संस्थापक जनुभाई उर्फ जनार्दनराय नागर मिटिंग ले रहे थे। उसमें डॉ. मेनारियाजी भी आमंत्रित थे। मिटिंग चलते 3 बज गई। मेनारियाजी ने घड़ी देखते ही छतरी की डंडी ऊंची की और कहा, 'अच्छा जनुभाई!'

जनुभाई बोले, 'अभी तो मिटिंग समाप्त ही नहीं हुई।' मेनारियाजी बोले, 'मेरा समय तो 3 बजे तक का ही है। संस्था आपकी है, आप चाहें तो रातभर ही मिटिंग करते रहें और तपाक से चल दिये।'

- म. भा.

पोथीखाना

समय की शिला पर कला का कमनीय रेखांकन

भोपाल से प्रकाशित 'कला समय' का अप्रेल-मई 2022 का अंक आजादी के अमृत महोत्सव पर विशेषांक के रूप में प्रकाशित है। इसमें स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान सन् 1857 से लेकर 1947, प्रथम स्वातंत्र्य समर से लेकर देश की स्वाधीनता तक मध्यप्रदेश के दस सम्भागों के बावन जिलों के स्वतंत्रता सेनानियों का जो योगदान रहा, उसका गौरवशाली विवरण, विवेचन और विश्लेषण दिया गया है।

इस दृष्टि से सम्पादक भंवरलाल श्रीवास ने इस विशेषांक में ऐतिहासिक, सामाजिक तथा देश-सेवा के लिए प्राण-प्रण से सर्वस्व बलिदान करने वाले वीरवर सेनानियों की संघर्षमय जीवनगाथा से रू-ब-रू कराने का सांगोपांग दस्तावेजीकरण देकर शिलपट्टी को जैसे

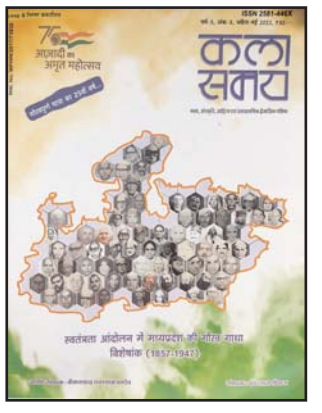

सिरोभाव से जड़ दिया है।

इस अंक के अतिथि सम्पादक कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय ने बड़े परिश्रम, खोजक दृष्टि तथा अनुभवी पांखों से अनेक मित्रों का सहयोग लेकर इसे स्थायी महत्त्व का बना दिया। अपने सम्पादकीय में उनका बड़ी आत्मीयता से उल्लेख किया है। सम्पादकीय कथ्य में उनका यह कथन पठनीय है- ''कला समय का यह अंक मध्यप्रदेश की उन हुतात्माओं के नाम है जिन्होंने ब्रिटिश सरकार के कारिन्दों के जुल्म सहे। अपने परिवार का परित्याग किया। समाज की उपेक्षा सही और वक्त आने पर अपने प्राणों का बलिदान भी किया। प्रस्तुत अंक अब तक प्रकाशित रपटों, ग्रन्थों से अलग सबसे सरल सहज है। इसमें अकादमिकता खोजने की अपेक्षा क्रमबद्धता देखें। न तो यह टेबल वर्क है और न ही पूर्व प्रकाशित सामग्रियों की फोटोकॉपी।''

- म. भा.

कुमाऊंनी लोक की कथा-गाथा की प्रभान्विति

लोक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष तो यह है कि जिस अंचल का आप अध्ययन करें उस अंचल की लोकधर्मी परम्परा और संस्कृति की सन्निधि की परिक्रमा से ही प्रभावी बनायें पर विश्वविद्यालयों के जिम्मे इसका अध्ययन-अन्वेषण होने के कारण हम पश्चिमीय दृष्टि से अपने अध्ययन को गौरवमण्डित करने में गौरव अर्जित करते हैं।

आजादी के अमृत वर्ष बाद भी हमारे अध्येताओं के हाथों में घोड़ी भले ही देशी हो पर उसकी लगाम विदेशी ही है। भारत के सम भारत देखने का हमारा चित्त अभी चेतन बना ही नहीं।

शब्द रंजन के लिए फतहसिंह लोढ़ा ने अपने सरस्वती विहार से शब्द-गंध के रूप में यह पुष्प-हार भेजा तो आमुख में प्रो. डॉ. श्यामसिंह 'शशि' ने लिखा, अलबत्ता यह बताना भी जरूरी है कि होफमेन वैरियर एल्विन व अन्य अंग्रेज लेखकों की लोक-कथाओं व लोक-गीतों की तरह हिन्दी में इस तरह की शोध-कृतियां नगण्य हैं जबकि ऐसी कृतियों की ही अनन्ता है। कुछ ऐसी ही बात दो शब्द के आशीर्वादी प्रो. डी. डी. शर्मा ने लिखी है। यह कि विदुषी डॉ. प्रभा पंत ने स्टिथ थॉमसन को अपना आदर्श बनाया है।

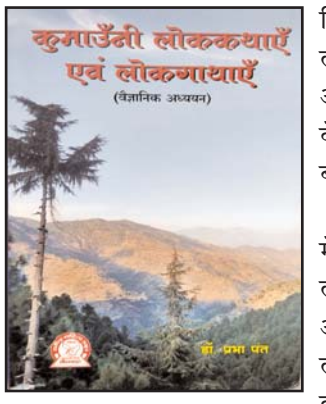

सच तो यह है कि देश के विभिन्न अंचलों में सर्वाधिक कार्य ही लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा पर हुआ है। इसमें राजस्थान को शिरोमणि कहना चाहें तो बेशक कह सकते हैं। लोक को आलोकित करने में सर्वाधिक और सुव्यवस्थित पहल करते राजस्थान से ही लोकसाहित्य, लोककला, विश्वंभरा, लोकसंस्कृति, रंगायन, वाणी, मरुभारती, माणक, रंगयोग, वरदा, परम्परा, राजस्थान भारती, वैचारिकी, वाग्वर जैसी पत्र-पत्रिकाएं निकलीं। फिर तो अन्य प्रान्तों से भी कई पत्र-पत्रिकाएं, संस्थाएं तथा विद्वानों ने सक्रिय हो लोककलाओं का आजादीकरण किया। यह वेल अभी भी हरी है सो खरी बनी हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रारम्भ में कुमाऊं के क्षेत्रीय परिवेश, लोकसाहित्यिक विधाओं और उनके वर्गीकरण के साथ लोककथा, गाथा के वर्गीकरण और विशेषताओं का विजय-कुल-श्रेष्ठत्व दिया है फिर कथा-गाथाओं के कथाानक रूपों (टेल टाइप्स) एवं कथाचक्रों (साइकिल्स) के अध्ययन से जानकारी को अधिकाधिक रूप से बिन्दु वर्णीय बना दिया है। इनके शीर्षक भी हिन्दी तथा अंग्रेजी में देकर दुरुह बना दिये हैं।

जो भी हो, लेखिका की दृष्टि ही इसमें सर्वोपरि रही है। उनका लिखा यह कथन, 'लोककथाओं में जहां एक ओर लोकमानस विविध रूपों में प्रतिबिंबित होता दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर लोकसंस्कृति के समस्त उपकरण भी मुखरित रहते हैं। अधिकांशत: लोककथाएं गद्यात्मक ही होती हैं किन्तु पद्यात्मक लोककथाओं की संख्या भी अत्यधिक है जिन्हें सामान्यत: लोकगाथा नाम से अभिहित किया जाता है।' यह कथन इस क्षेत्र की समझ के विद्वानों के लिए कई प्रश्न खड़े कर सकता है।

यतीन्द्र साहित्य सदन, सरस्वती विहार, शब्द गंध द्वार, भीलवाड़ा-311001 का यह प्रकाशन 160 पृष्ठों का 350 रूपया कीमत लिये है। डॉ. प्रभा पंत के सम्पर्क नं. 94111-96868 हैं।

-डॉ. तुक्तक भानावत

पर्यावरण का पर्यालोचन करती पठनीय पोथी

55 शीर्षकों में पर्यावरण का पर्यालोचन करती अत्यन्त व्यावहारिक लोकनिधि के रूप में गणि मनितप्रभसागरजी ने पाठकों को आनन्दमय जीवन जीने की यह रामबाण पोथी लिखी है। मनुष्य जिस ढंग से आक्रामक अतिक्रमी बन प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है, ऐसे समय यह पुस्तक और अधिक उपयोगी और आवश्यक अवदान है।

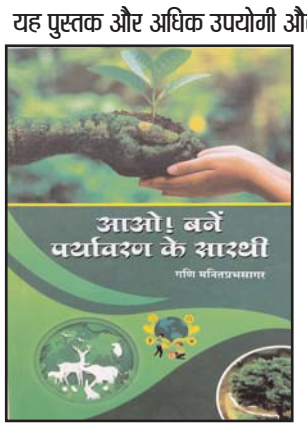

'आओ! बनें पर्यावरण के सारथी' के मंगल आशीष में आचार्य जिनमणिप्रभसूरि ने लिखा- ''परमात्मा आदिनाथ से लेकर महावीर तक समस्त तीर्थंकरों की देशना में पर्यावरण की जागरूकता का सन्देश है। तीर्थंकर केवल चलते-फिरते प्राणियों की हिंसा को ही हिंसा नहीं मानते अपितु पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति की हिंसा को भी हिंसा कहते हैं क्योंकि ये सब सजीव हैं और पर्यावरण के सन्तुलन व सुरक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।''

पर्यावरण से जुड़े पांचों तत्वों के उपयोग को लेकर शास्त्रों, धर्मग्रन्थों, महामानवों तथा ऋषि-महात्माओं के मंतव्यों से लेकर विश्व-परिवेश में जो सुकृतियां और विकृतियां फैली हुई हैं उन सबका साधार हवाला देकर गणिश्री ने अपने अध्ययन को बड़ी प्रामाणिक संजीदगी से रोचक बनाया है। कुछ नमूने द्रष्टव्य हैं-

(1) पर्यावरण प्रदूषण के कारण सुनामी, बाढ़, भूकम्प, ज्वालामुखी, अकाल आदि का आतंक छाया रहता है। एक भय थमा नहीं कि दूसरी समस्या मुंह बायें खड़ी हो जाती है। (पृ. 7) (2) जो वीरान एवं दुर्लभ स्थानों में वृक्ष लगाता है वह अपनी बीती हुई तथा आने वाली पीढ़ियों को तार देता है। (पृ. 15) (3) देश के 19,000 गांव स्वच्छ पेयजल के लिए ताक रहे हैं और 6584 प्रखण्डों में से 1034 जूझ रहे हैं जिन्हें डार्क जोन के रूप में चिन्हित किया गया है। (पृ. 33) (4) सिगरेट या बीड़ी पीने वालों की धुआं में तीन गुना अधिक निकोटिन, तीन गुना अधिक टार तथा पचास गुना अधिक अमोनिया होता है। (पृ. 47) (5) चारों ओर खिलते-लहलहाते-छटादार-सुन्दर हरे-भरे पेड़ गृह को आनन्दित करते हैं वैसे ही बिगड़े ग्रहों को भी ठीक कर देते हैं। (पृ. 68) (6) अणु बम, परमाणु बम से भी ज्यादा खतरनाक प्लास्टिक है जो हमारे ही हाथों से उपयोग में आ रहा है। कानून की सख्ती व खुद की समझदारी से ही इसे घटाया जा सकता है। (पृ. 106) (7) कैलाश, हिमालय, शत्रुंजय, गिरनार, आबू ; सबके सब पर्वत हमारी अनमोल अमानते हैं। इनका असीम दोहन हमारे जीवन का असामयिक और अशान्त अन्त है। (पृ. 111)

कुल 126 पृष्ठों की मात्र 60 रूपये मूल्य की यह पुस्तक श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला (जालोर राज) से प्रकाशित हुई है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

मृतप्राय होने के बाद कविता की संजीवनी शक्ति

प्राण शक्ति के रूप में कविता को विद्वानों ने विभिन्न रूपों में व्याख्यायित किया है। सामने खड़ी, साथ में सोई मृत्यु के साक्षात्कार पर अंग्रेज कवियों की कुछेक कविताएं मिलती हैं पर भारत में इस तरह की स्थिति की स्थित प्रज्ञता के रहते अनेक कविताएं मिलती हैं।

मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत ने विकट बीमारी की हालत में कविताएं लिखकर अपना दर्द हल्का किया है जिसका मैं साक्षी बना। लड़खड़ाती मांदगी में उन्होंने 'ए मेरे मन!' नामक कविता पोथी छपवाई। छापाखाने से लेकर जयुपर के लालभवन में गये और वहां बिराजित आचार्यश्री हीरामुनिजी को भेंट की। मेरे साथ डॉ. संजीव और हमारा पूरा परिवार उनके साथ था।

और उसके बाद कोटा के 01 अगस्त 1935 में जन्मे प्रख्यात गीत-गजलकार हम सबके सम्मानित बृजेन्द्र कौशिक ने अपना सद्य प्रकाशित 'ऐसे-वैसे-जैसे भी' नामक जनगीत संग्रह भेजा तो मैंने दीपावली का अलभ्य उपहार मानते उन्हें बधाई दी। दोनों ने अपनी बांसों उछलती खुशियां प्रकट कीं।

उसके बाद जब संग्रह में उनका 'अभिधेय' पढ़ा जिसमें उन्होंने लिखा- ''पता नहीं, क्या-कैसे-क्यों हुआ लेकिन इसी 28 फरवरी को स्वस्थ बैठे हुए को अचानक बेहोशी का दौरा पड़ा और मृतप्राय को निजी अस्पताल ले जाया गया। आप सभी के बीच अभी और कुछ रहना था, शायद इसीलिए घर तो लौट आया, लेकिन दैहिक रूप से पूर्णत: खोखला होकर। खास बात यह हुई कि न खांसी-जुकाम, न यह-वह कोई बीमारी लेकिन इस अजीब दौरे ने शरीर का जैसे सारा होनापन ही निचोड़ लिया। पाचन-तंत्र, श्वसन-तंत्र सारी ऊर्जा सहित सारा दैहिक स्वरूप और क्रिया-कलाप खत्म कर दिया। प्रमुख समस्या थी कि तन-मन को पूर्ववत् सक्रिय और रचनात्मक कैसे किया जाय सो कलम उठाई और यह संकलन तैयार हुआ। खुशी की बात यह है कि इस सृजनात्मक पहल ने मुझे फिर से जिन्दा होने में अकल्पनीय सहयोग दिया।''

कविता चाहे स्वयं की हो अथवा अन्यों की; उसने सदैव ही मनुष्य की रक्षा की है। बोध, रस तथा जीने का सहारा दिया है। साहित्य ही क्यों; अन्यान्य पुरातत्व, संस्कृति, स्थापत्य, धर्म, अध्यात्म, कला जैसे क्षेत्रों में भी हमारी विरासती देन ने हमारी सभ्यता को अक्षुण्ण बनाये रखा है। उसीसे हमें अपने विकास की प्रेरणा मिली है। इससे हमारे इतिहास की पुनर्लेखी होती रही।

सन् 1987 से प्रारम्भ हुई कौशिकजी की प्रकाशन यात्रा गीत, गजल, विविध छन्दी काव्य, कविता, कहानी तथा लघुकथा की लगभग दो दर्जन कृतियों में युगसत्य की यथार्थजीवी संवेदनाओं से जुड़ी हमारी जिन्दगी को बड़ी तसल्ली से जोड़ती है। यह तस्वीर मूक नहीं रहकर हमारी असलीयत को लगातार खटकाती हमें साहस भरी चुनौती देती हर समय जुल्मों से जंग करने की शक्ति देती है। संग्रह की अन्तिम कविता 'जंग करो जुल्मों से' की हुंकार-

जंग करो जुल्मों से जम कर जंग करो
तानाशाही की तंद्रा को भंग करो।।
रिरियाने से नहीं क्रूरता रूकती है
प्रतिरोधों के तेवर तल्ख दबंग करो।।
लक्ष्य कुचक्रों के लाक्ष्यगृह ध्वंस अगर
अपने मन को सुलगी हुई सुरंग करो।। (पृ. 104)

कौशिकजी के सम्पर्क नं. 94145-96298 हैं।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (153) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रोड़ियों में रतन ढूंढ़ इतिहास का अक्षर बनाते बोराणाजी

श्री रमेश बोराणा से जब-तब भी मैं मिलता हूं या मित्रों की महफिल में उनकी चर्चा चलती है तो मुझे कबीर के दोहे की यह पंक्ति याद हो आती है- 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।' इसके नीचे की पंक्ति मैं जोड़कर दोहे को पूरा करता हूं- 'मोल करो जी हंस का, छोड़ो बगुला ध्यान।।'

बोराणाजी से मेरी पहली भेंट जोधपुर में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी में हुई जब वे अध्यक्ष बने और मैं भी सरकार द्वारा सदस्य के रूप में वहां पहुंचा। तब से उनसे बना भाईचारा आज भी दृढ़तर बना हुआ है। इसका अहसास मैंने 25 नवम्बर 2022 को पाया जब उन्होंने अपना सदाबहार संस्कारजनित स्नेह सौजन्य दरसाते मुझे मोबाईल पर अचानक सूचना दी, 'भानावतजी, मैं रमेश बोराणा सांवलिया सेठ के दर्शन कर उदयपुर के लिए रवाना हो गया हूं। करीब घण्टे भर में सीधा आपके वहीं आकर चाय पीऊंगा।'

मैं सकपका रह गया कारण कि अब इस तरह का यार-दोस्तों में भी याराना देखना दुर्लभ हो गया है। बोराणाजी को अधिक समय नहीं हुआ; सरकार ने उन्हें राज्यमंत्री का दर्जा देकर राजस्थान राज्य मेला प्राधिकरण की महती जिम्मेदारी सौंपी है। याद आया, कुछ समय पूर्व ही तो मैंने उन्हें बधाई दी थी।

उनकी प्रतीक्षा करते मैंने उनके साथ वह मंत्री की ठसक देता लवाजमा नहीं देखा। पूछा तो बाले, 'उसे सर्किट हाउस भेज दिया। संस्कृति-सरोकारों की बातें आपसे सहजमना हुए बिना नहीं हो सकती।'

उस डेढ़ घण्टे की चाय-चुस्की पर इधर-उधर की बातें करते बोराणाजी ने कहा- 'मेले हमारी सभ्यता और संस्कृति के सदाबहार सरोकार ही नहीं, अतीत एवं भावी जन्मों के कल्याणकारक भी हैं। मेले अनेक नदियों के उद्गम, ऋषि-महात्माओं के तपस्थल तथा पराभव को निचोड़ती परिक्रमाओं के पुण्यार्थ परचम रहे हैं। आज भी वे उतने ही ऊर्जावान, अलख देते तरंगीत हैं।'

उनके इस कथन ने मुझे अपने धुर बचपन से लेकर अब तक देखे अनेक मेलों के दृश्यावलोक में पहुंचा दिया। बोला, कहां नहीं हैं मेले! यह मेवाड़ ही अद्भुत-अनुपम छटा देता मेलों का ही मेलमिलाप है।

शिवरात्रि का जरगाजी का मेला लोकदेवता रामदेवजी ने अपने चरवादार जरगा की स्मृति में शुरू किया। चित्तौड़ के किले पर भरने वाले अदृश्य मेलों में दीवाली का भूतों का मेला और बैकुण्ठ चतुर्दशी का दिव्य आत्माओं का मेला; माघ पूर्णिमा का बेणेश्वर मेला। लीला पुरुष मावजी ने यहां बारह पोठी कागजों में अपनी भौंहों, कुहनी, पांव के अंगूठे और चोटी की मरोड़ी से चित्रात्मक चोपड़े लिखे। त्रेतायुगीन मातृकुण्डिया मेला जहां परशुराम ने तपस्या कर मातृहत्या का पाप धोया।

डॉ. महेन्द्र भानावत एवं रमेश बोराणा

ऐसा ही वैसाखी पूर्णिमा का सतयुगीन गौतम ऋषि की याद में गौतमेश्वर मेला। कैलाशपुरी का एकलिंगजी मेला जहां महाराणा प्रताप ने एकलिंगनाथ के समक्ष राजपाट त्याग उनकी दीवानी धारण की। चेती नवमी का केशरियाजी में आदिवासियों का कालिया बाबा का मेला। होली पर गड़बोर का चारभुजाजी का मेला जहां पाण्डवों ने मूर्तिपूजा की। हरियाली अमावस्या पर उदयपुर की सहेलियों की बाड़ी का मेला महाराणा फतहसिंह ने रानी की मंशा पर प्रारम्भ किया। और भी मेले जहां भी भरते हैं वे सब मनुष्यों के खेले तो हैं ही पर धर्म और अध्यात्म के आत्मिक आचरण के उदात्त बिन्दी-तिलक भी हैं।

मैंने देखा, बोराणाजी सतयुग से लेकर त्रेता, द्वापर और फिर कलियुग की ऊंडी भावभूमि में खो गये हैं। बोले, 'सच है, मेले मनुष्यों के मेहराब हैं। हमारी पुरातन से लेकर अधुनातन के सांस्कृतिक उत्सव हैं। इनमें आमजन की आस्थामूलक यशस्वी जानकारी के दस्तावेजीकरण के साथ ऐसी यथोचित व्यवस्था होनी चाहिये जहां हर मेलार्थी घर जैसा माहौल महसूस करे।' डेढ़ घण्टा कैसे व्यतीत हो गया, कुछ पता ही नहीं चला। तुक्तक और रंजना भी इस भावनात्मक भेंट के साक्षी बने और उनका आत्मानन्दी अभिनन्दन कर विदा दी।

जोधपुर में 10 मई 1955 को जन्मे बोराणाजी अपने छात्र जीवन से ही सामाजिक सरोकारों तथा सांस्कृतिक सोपानों से समाजसेवाव्रती बन ओजस्वी वक्ता के रूप में सबके बीच अपनी पहचान बना राजनीति का स्पर्श पाते रहे। संस्कृति, साहित्य एवं प्रदर्शनधर्मी कलाओं और उनसे जुड़े कलाकारों के साथ वे पिछले पांच दशकों से सक्रियता से एकमन बने हुए हैं। स्वयं अच्छे नाट्यकर्मी, लेखक, निर्देशक तथा रंगमंचीय कला के धनी बन धन्य होते सुकुमार बने हैं।

केन्द्र सरकार ने देश के सांस्कृतिक उन्नयन के लिए जो सांस्कृतिक केन्द्र खोले उनमें उदयपुर, पटियाला तथा इलाहाबाद केन्द्रों में बोराणाजी की उल्लेखनीय सेवाएं रहीं। आकाशवाणी, दूरदर्शन केन्द्रों में सलाहकार रहे। अनेक संगठनों तथा संस्थाओं ने उनके निर्देशन एवं परामर्श में अच्छा काम किया। सांस्कृतिक सलाहकार के रूप में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा निर्मित कई समितियों के प्रमुख सलाहकार रहे। यह सूची द्रोपदी का चीर लिए है। उनकी वाणी, व्यवहार और विवेक भी हरएक को अपना बनाने तथा हर व्यक्ति का उनसे जुड़ने का साक्ष्य है।

बोराणाजी की मोबिल वार्ता अन्य साथियों की तरह हलो-हाऊ तक सीमित नहीं रहती। वे नया कुछ जानने और नई कुछ जानकारी देने के चेतन प्रहरी बन बड़ी सहज सजगता लिए आत्मालाप करते हैं। एकदिन उन्होंने मुझे सहज करते उन खिलाड़ियों की जानकारी चाही जो अभी भी ख्यालों के उस्ताद खिलाड़ी बन स्वस्थ मनोरंजन कर रहे हैं।

मैंने राजस्थान में प्रचलित चिड़ावी, मारवाड़ी, शेखावाटी, मेवाड़ी, तालबंदी, तुर्राकलंगी, रम्मती, अलीबक्षी ख्यालों का जिक्र करते कहा कि अब वैसा होनहार ख्यातिप्राप्त जनप्रिय उस्ताद-खिलाड़ी शायद ही कोई मिले लेकिन इधर उदयपुर में ही एक कठपुतली कलाकार तोलाराम मेघवाल हैं जो नब्बे पार की अणु-उम्र में चल रहे हैं। इन्होंने अन्तिम महाराणा भूपालसिंहजी के फर्राशखाने की नौकरी करते छोकरी बन रूड़े नृत्य कर उनका आशीर्वाद लिया और उनके वहां अनेक मेहमानों को रिझाते सम्मान लिये।

फिर वे भारतीय लोककला मण्डल में देवीलाल सामरजी के सान्निध्य में होनहार नृत्यकार एवं कठपुतली कलाकार की पहचान दिये पूरे देश और विदेश में छाये रहे। सन् 1965 में बुखारेस्ट में हुए तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में तो ऐसा कमाल दिखाया कि विश्व का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उन कलाकारों में से अब तोलाराम ही हमारे बीच हैं।

मेरे अचरज का ठिकाना नहीं रहा जब बोराणाजी ने अचानक मुझे सूचना दी कि राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2022-23 के सम्मानितों में तोलारामजी को नामांकित किया है। तोलाराम के लिए यह खबर चौंकाने वाली रही कि अणु-उम्र में पड़े उस अकेले कलाकार को इक्यावन हजारी बना दिया।

कलाकार तो अपनी कला के लिए आजीवन समर्पित साधक बना रहता है। जनता का बहुरंजन करते उसे तालियों की गड़गड़ाहट समुद्र की तरह सन्तोष धनी बना देती है। यही उसकी सबसे बड़ी कीर्ति और थाती है। बोराणाजी जैसे लोग बिरलों में भी बिरले होते हैं जो रोड़ियों में हंस-पांखी बन रतन ढूंढ़ उन्हें ओळखाण देते इतिहास का अक्षर बनाते हैं।

जनजीवन में लोकप्रिय होती क्रिप्टोकरेंसी

- प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत -

क्रिप्टोकरेंसी का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है। भारत में हर 6 शहरी लोगो में से एक के पास क्रिप्टोकरंसी है। डेढ़ करोड़ लोगों ने क्रिप्टोकरंसी में निवेश कर रखा है। कोविड-19 से पहले क्रिप्टोकरेंसी में लेन-देन समाज के एक वर्ग विशेष तक सीमित था, किन्तु महामारी के दौरान युवा वर्ग में यह मुद्रा काफी लोकप्रिय हो गई। समाज का एक वर्ग विशेष क्रिप्टोकरेंसी लेनदेन में खासी रुचि ले रहा है। सरकार क्रिप्टोकरेंसी का समर्थन नहीं कर रही है फिर भी यह करेंसी लोकप्रिय होती जा रही है।

पुराने जमाने में व्यवसाय का आकार अत्यन्त छोटा हुआ करता था। गांव, शहर तक व्यवसाय सीमित था तब लोगों का आपस में परिचय होने के कारण उनमें आपस में विश्वास था। ऐसे में व्यवसाय करने के लिए किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं थी लेकिन समय के साथ व्यवसाय का आकार बढ़ता गया तथा अपरिचितों के साथ व्यवसाय करने के कारण नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट आती गयी। इससे आपसी विश्वास कम होता गया।

विश्वास बहाल करने में सरकार, बैंक तथा बड़े-बड़े उद्योगपति मध्यस्थ के रूप में उभर कर आए। परिणामस्वरूप अपरिचितों से व्यवसाय करना आसान हो गया। पैसा बैंकों में सुरक्षित रखना, ऑनलाइन त्वरित गति से धन का हस्तांतरण संभव हो पाया। ऑनलाइन से फेक करंसी की समस्या कम होती गयी। व्यवसायिक लेनदेन बैंको के माध्यम से होने से लोगों का विश्वास उत्पन्न होने लगा और व्यवसाय अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक फेल गया। पिछले दशक से जनता का विश्वास बैंको के प्रति धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। जनता अब ऐसी भुगतान प्रणाली चाहती है जिसमें बैंको की भूमिका नगण्य हो।

बैंक प्रत्येक व्यवहार के लिए फीस वसूल करते हैं। चाहे चेक बुक लेनी हो या ऑनलाइन धन का स्थानांतरण करना हो, चाहे डेबिट कार्ड लेना हो या क्रेडिट कार्ड लेना हो। क्रेडिट कार्ड से भुगतान करते समय दुकानदार को पूरा पैसा नहीं मिलता है। दुकानदार को क्रेडिट कार्ड प्रोसेसिंग कंपनी को फीस के रूप में पैसा चुकाना पड़ता है।

वीजा मास्टर कार्ड जैसी कंपनियां क्रेडिट कार्ड के प्रोसेस के लिए व्यवहार मूल्य का 1.5 प्रतिशत से 2.5 प्रतिशत तक फीस वसूल करती हैं। अमेरिकन एक्सप्रेस तो 2.5 प्रतिशत से 3.5 प्रतिशत वसूली फीस के रूप में वसूल करती हैं। इसलिए व्यापारी वर्ग क्रेडिट कार्ड से क्रय करते समय न्यूनतम क्रय की सीमा रखता है। अनुमान के अनुसार ये मध्यस्थ वैश्विक जीडीपी का लगभग 3 प्रतिशत वसूली फीस के रूप में प्रतिवर्ष वसूल करते हैं।

हमारी व्यक्तिगत जानकारियां बैंकों के पास उनके सर्वर पर उपलब्ध रहती हैं जहां से इनके लीक होने की पूरी संभावना बनी रहती है। यदि बैंक फेल हो जाता है तो पाँच लाख रुपए तक की राशि ही सुरक्षित है क्योंकि बीमा पाँच लाख रुपए तक का ही होता है। कभी-कभी तो बैंक हमारी ही धनराशि के निकालने पर प्रतिबंध लगा देता है। जब पीएमसी बैंक की हालत खराब हुई तो निकासी पर राशनिंग लगा दी गई। इसी तरह लॉकडाउन में भी प्रतिबंध लगा दिया गया। हमारे ही पैसे पर निकासी पर प्रतिबंध के कारण बैंकों के प्रति भी लोगों का विश्वास धीरे-धीरे टूट रहा हैं।

बैंक में न्यूनतम शेष पर एक खाता मैन्टैन करना पड़ता है। इस खाते को ऑनलाइन संचालित करने के लिए अर्थात इंटरनेट बैंकिंग सर्विसेज के लिए हमें बेंकों से इजाजत लेनी पड़ती है। बिना बेंकों की मध्यस्थता से यह संभव नहीं है जबकि क्रिप्टोकरेंसी में लैनदेन के लिए बैंक अकाउंट की आवश्यकता ही नहीं है। आज भी लगभग 2.1 बिलियन लोगों के पास बैंक खाते उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे लोगों के लिए क्रिप्टोकरेंसी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

बैंक की तरह बड़े-बड़े उद्योगपति भी जनता में अपनी पैठ जमाकर उनका विश्वास जीतने में सफल हुए। कुछ उद्योगपतियों ने तो इतनी साख अर्जित की है कि लोग आंख बंद करके इन पर विश्वास करने लगे किन्तु अब इन कंपनियों पर भी जनता का विश्वास कम होता जा रहा है। इन कंपनियों पर भी साइबर अटैक होने से हमारी व्यक्तिगत जानकारियां लीक हो रही हैं। कंपनियों के नाम से भ्रमित विज्ञापन के माध्यम से नकली माल बेचने की खबरें भी आ रही हैं। सरकारें भी बेरोजगारी, मुद्रा स्फीति, भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही जैसे मुद्दे हल करने में असमर्थ रही हैं।

इस दृष्टि से सारा कामकाज अब क्रिप्टोकरेंसी के माध्यम से ही सम्भव है। क्रिप्टोकरेंसी में व्यवहार करने के लिए किसी भी मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि इसका सृजन ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर आधारित होता है। इसमें स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट के माध्यम से व्यवहार स्वचालित होते हैं। एकबार व्यवहार ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर पूर्ण होकर ग्रुप के रूप में चैन से जुड़ जाता है तब कोई भी इसे परिवर्तित नहीं कर सकता।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 दिसंबर 2022

सम्पादकीय

स्वतंत्रता सिपाही और सेनानी

आजादी के 75वें वर्ष में पूरे देश में विशेष हलचल और उत्सवी वातावरण है। कई जगह ऐसे विशिष्ट 75 व्यक्ति सम्मानित किये जा रहे हैं जिन्होंने कला, संस्कृति, साहित्य तथा अन्यान्य क्षेत्रों में उपलब्धि अर्जित की है।

ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों के सम्बन्ध में भी जानकारियां जुटाई जा रही हैं जिन्होंने स्वतंत्रता के आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जेल में अनेक यातनाएं झेलीं और स्वतंत्रता के बाद भी जनोपयोगी शिक्षण जैसे कार्यों को प्रारम्भ कर आजीवन अपना जमीनी योगदान दिया।

ऐसे भी हैं जो जेल में नहीं गये पर बाहर रह बड़ा जबर्दस्त कार्य करते रहे। लुकछिप कर एक जगह से दूसरी जगह आवश्यक सामग्री एवं सन्देश पहुंचाते रहे।

कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने जेल की हवा खाई पर पेंशन आदि सुविधाएं स्वीकार नहीं की। वे स्वतंत्रता सेनानियों की सूची में भी अपनी पहचान नहीं चाहते अनाम ही बने रहे। कहते रहे कि कुछ प्राप्ति के लिए हमने काम नहीं किया।

ऐसे भी मिले जो आजादी के बाद राजनीति छोड़ सामान्य जीवन व्यतीत करते रहे। उन्होंने खद्दर पहनना भी छोड़ दिया तो कुछ जीवन पर्यन्त खद्दर पहनते रहे। चरखा चलाते रहे तो कुछ मात्र खद्दर या फिर सादी टोपी पहने रहे।

ढूंढ़ने पर ऐसे भी मिल जायेंगे जिन्होंने अपने कुछ होने का बड़ा लाभ लिया तो ऐसे भी हैं जिनका जन्म ही जेल में हुआ और वे कहते भी हैं जो लगातार एक जेल से दूसरी जेल में कठोर कर्म करते मरणधर्मी सजा काटते भी हंसते-मुस्कराते रहे। अपनी कवित्व शक्ति द्वारा जोश दिलाने और शौर्य प्रदर्शित करने वाले कवि भी कम ख्यात नहीं रहे। उन सबको श्रद्धा के पुष्प अर्जित करने में हमें गौरव की अनुभूति है।

छात्रों की सर्वोच्च प्राथमिकता पढ़ाई और लिखाई

कानोड़ (ह. सं.)। आज के छात्रों की सर्वोच्च प्राथमिकता पढ़ाई और लिखाई है। ज्ञान प्राप्ति ही उनके अंधेरे की कई खिड़कियां खोल प्रकाश देती हैं। इसलिए वे मोबाईल मेन नहीं बनकर अपनी आधुनिकता का रंग छोड़ अपने घर में भी अपनों के साथ अपनी ही भाषा में संवाद कर हमतम की संस्कृति से दूर रहे।

ये विचार लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने 26 नवम्बर 2022 को तुलसी अमृत निकेतन कानोड़ में आयोजित शिक्षक-विद्यार्थी सम्मान समारोह में छात्रों के बीच व्यक्त किये। समारोह वहां के सुशीला-प्रतापसिंह भाणावत चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित था।

प्रारम्भ में निकेतन के संचालक शिक्षाविद् मनोज भानावत ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि यहां पढ़ने वाले छात्र सदैव से ही पढ़ाई में अव्वल रहे हैं इसलिए यह गांव 'शिक्षा नगरी' के रूप में जाना जाता है।

ट्रस्ट सचिव डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत ने कहा कि छात्रों को अपने को आधुनिकता की चकाचौंध से दूर रखते बैलेंस रूप में व्यक्तित्व के विकास के साथ ज्ञानाराधना, स्वास्थ्य तथा संयमी जीवन के सरोकारों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

समारोह में कानोड़ स्तर पर कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। इनमें रिद्धि दाणी को वाणिज्य वर्ग में 94.6 प्रतिशत अंक, राजल शक्तावत को विज्ञान वर्ग में 93 प्रतिशत अंक तथा कोमल प्रजापत को कला वर्ग मे 91 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार शत प्रतिशत परिणाम प्रदान करने पर हर्षप्रभा कुदाल, शिवराजसिंह सारंगदेवोत तथा ओंकारलाल गोपावत को सम्मानित किया गया।

ट्रस्ट की सदस्य सुमित्रा कुदाल, मीनाक्षी लसोड़, डॉ. कल्पना भाणावत भी उपस्थित रहीं। गणमान्य अतिथि के रूप में डॉ. तुक्तक भानावत, सीए आलोक लसोड़, सीए हितेश कुदाल, सोहन भाणावत, निर्भयसिंह राव, संजय भाणावत, तेरापंथ महिला मंडल सदस्य, पेंशनर समाज के अध्यक्ष जवाहर नागोरी, प्रिंसिपल हेमंत पटेल तथा तुलसी अमृत निकेतन संस्थान के कार्यकारी सदस्य एवं शिक्षकगण उपस्थित थे। संचालन राजेश वया ने किया। **-मनोज भानावत**

तोलाराम को कला-साधना का कठपुतली सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी का इस वर्ष का कठपुतली कला-सम्मान उदयपुर के तोलाराम मेघवाल (91) को देने की घोषणा अकादमी अध्यक्षा बिनाका जेश मालू ने की।

तोलाराम ने छोटी उम्र में महाराणा भूपालसिंह के फर्राशखाने में नौकरी की जहां वे शिकार के समय तम्बू तानने के साथ छोकरी बन नृत्य प्रस्तुति द्वारा महाराणा को नृत्यमय अदायगी से रिझाते रहे। महाराणा के प्रोत्साहन से धीरे-धीरे वे नृत्यकला में निष्णात हो गये। महाराणा के मेहमानों के समक्ष भी इन्होंने बड़ी वाहवाही अर्जित की।

फिर भारतीय लोककला मण्डल में देवीलाल सामर के सान्निध्य में नृत्य तथा कठपुतली कलाकार के रूप में बड़ी ख्याति अर्जित की। डॉ. महेन्द्र भानावत के अनुसार सामरजी ने जब पुतलीकला को पुनर्जीवन देते 'मुगल दरबार' खेल की रचना की तो तोलाराम-दयाराम ने रूमानिया के अन्तर्राष्ट्रीय पुतली समारोह में उसकी प्रस्तुति देकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया तब से राजस्थान पारम्परिक पुतलीकला में विश्व का सरताज बन गया। पुरस्कार स्वरूप तोलाराम को 51 हजार की राशि दी जायेगी। शब्द रंजन की हार्दिक बधाई।

'रामतिया मत तोड़' के कवि राजावत अलविदा

जयपुर (ह. सं.)। अपने समय के कवि सम्मेलनों के जनप्रिय कवि कल्याणसिंह राजावत (83) 16 नवम्बर 2022 को अलविदा हो गये। राजस्थानी के मेघराज 'मुकुल', गजानन वर्मा, राजावत और माधव दरक ने पूरे देश में अपनी प्रतिनिधि कविता क्रमशः सेलाणी, बाजरा री रोटी, बागां बिच बेलड़ी तथा एड़ो म्हारो राजस्थान से अटूट लोकप्रियता हांसिल की।

श्रीकृष्ण शर्मा के अनुसार पिछले दिनों राजावत की पुत्री ने अपने कवि-पिता के अभिनन्दन में यादगार समारोह आयोजित किया जिसमें 150 के करीब ख्यातलब्ध रचनाधर्मी, काव्यरसिकों की उपस्थिति में राजावत भी व्हिलचेयर पर उपस्थित हुए। उनकी वाणी अवरूद्ध होने से वे निःशब्द रहे और केवल हाथ हिला सबका अभिवादन करते रहे।

हिंजिंक को एलएसीपी स्पॉट लाइट अवार्ड्स में 40वां स्थान

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता समूह की जिंक, लेड और सिल्वर उत्पादक कंपनी हिंदुस्तान जिंक को लीग ऑफ अमेरिकन कम्युनिकेशंस प्रोफेशनल्स (एलएसीपी) में लगातार तीसरी बार सम्मानित किया गया। हिन्दुस्तान जिंक की तीसरी इंटीग्रेटेड एनुअल रिपोर्ट में मेनी रीजन टू सेलिब्रेट, मेनी मोर टू लुक फॉरवर्ड टू थीम को प्रदर्शित करते हुए रिपोर्ट के प्रतियोगिता वर्ग में उत्कृष्टता के लिए गोल्ड अवार्ड प्रदान करने के साथ ही एलएसीपी स्पॉटलाइट अवार्ड में विश्वस्तर पर 40वां स्थान मिला है। उत्कृष्टता के लिए कंपनी की ने लगातार बेहतर स्थान प्राप्त करते हुए विश्व की शीर्ष 100 कंपनियों में अपनी जगह बनायी है।

कोविड 19 के बाद वर्ष 2020-21 में कंपनी द्वारा नई सकारात्मक शुरूआत और उत्कृष्टता के साथ व्यवसायिक क्षेत्र में उपलब्धियां हांसिल की है। अपने सस्टेनेबल संचालन और सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव में कंपनी द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाये गये है। रिपोर्ट में हितधारकों को संपूर्ण संचालन की जानकारी प्रदान की गयी है। यह सम्मान कंपनी को और अधिक उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करता है।

गीतांजली में आठ वर्षीय रोगी के मोतियाबिंद का सफल इलाज

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने आठ वर्षीय रोगी के मोतियाबिंद का सफल ऑपरेशन किया है।

नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. ऋषि मेहता ने बताया कि उदयपुर निवासी 8 वर्षीय रोगी सुदेशसिंह (परिवर्तित नाम) गत 4 महीनों से ठीक से देख नहीं पा रहा था। उसके माता-पिता जांच के लिए गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल लेकर आए। जांच में बच्चे को मोतियाबिंद पाया गया। इस पर मरीज का सफलतापूर्वक निशुल्क ऑपरेशन व लेंस प्रत्यारोपण किया गया। ऑपरेशन करने वाली टीम में डॉ. ऋषि मेहता, डॉ. एषा शाह, डॉ. आलोकित शर्मा, नर्स तरुणा माली शामिल थे। डॉ. मेहता ने बताया कि प्रायः मोतियाबिंद की समस्या वृद्धावस्था में देखी जाती है। बच्चों में इतनी कम उम्र में मोतियाबिंद बहुत कम देखने को मिलता है। छोटे बच्चों में इस बीमारी के होने पर इसका निदान जल्द होना आवश्यक है। अब रोगी सामान्य रूप से देख पा रहा है।

डॉ. भगवतीलाल व्यास भगवतशरण हुए

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दी-राजस्थानी के सभी विधाओं के ख्यातनाम लेखक डॉ. भगवतीलाल व्यास (79) 17 नवम्बर 2022 को भगवतशरण हो गये। शवयात्रा में उदयपुर के उनके अभिन्न मित्रों में डॉ. कुन्दन माली, डॉ. ज्योतिपुंज, किशन दाधीच, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. देव कोठारी, डॉ. उग्रसेन राव, डॉ. एम. पी. शर्मा सहित अनेक लोगों एवं परिजनों ने भाग लिया।

डॉ. भानावत ने बताया कि बचपन से ही भगवती बाबू 'आलपीनों का आसन' लिए 'सूरज लीलती घाटियां' में 'सरकने वाली गाड़ी' के सहारे 'फुटपाथ पर चिड़िया नाचती है' के गान को अनहद नाद, 'अग्निमंतर' और 'सबद राग' का सरगम दिये 'कठा सूं आवे है सबद' और 'शब्दों की धरती है कविता' की बुनावट करते अन्त में 'परदे के आगे से परदे के पीछे' हो गये।

कुमावत सहायक डिस्ट्रीक्ट प्रांतपाल नियुक्त

उदयपुर (ह. सं.)। रोटरी डिस्ट्रीक्ट प्रांतपाल निर्मल कुणावत ने वर्ष 2023-24 के लिए सुषमा कुमावत को सहायक डिस्ट्रीक्ट प्रांतपाल नियुक्त किया है। सहायक प्रांतपाल की नियुक्ति वर्ष भर में किये गये कार्यों के आधार पर की जाती है।

अपना देश अपनी संस्कृति

मेलों में झुलाती चक डोलर

डोलर बड़े मेलों का मुख्य आकर्षण रहा है। यह एक बड़े झूले का रूप होता है। जमीन से सटे दो पाटों के बीच ऊपर-नीचे, दायें-बायें पालनेनुमा चार पालकियों वाला यह डोलर 40-50 फीट ऊंचाई लिये होता है। प्रत्येक पालकी में चार-छह व्यक्ति बैठकर जब धरती और आकाश के बीच तेजी से झूला लेते हैं तो बैठने वालों के ही नहीं, देखने वालों तक के दिल दहल उठते हैं।

बहुत से ऐसे भी होते हैं जो इसका मजा नहीं ले पाते हैं। झूलते समय उन्हें बुरी तरह चक्कर आने लगते हैं। इस झूले को डोलर के अलावा 'चक डोलर' भी कहते हैं। काष्ठशिल्पी एक डोलर की बनवाई में कम-से-कम भी चार लाख रूपये का खर्च होना बताते हैं। इसका रखरखाव तथा एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाने का भाड़ा भी कम परेशानी तथा मोल का नहीं होता। इसीलिए इक्के-दुक्के ही डोलर चलाने का पेशा करते हैं।

उदयपुर में सन् 1970 से सहेलियों की बाड़ी में लगने वाले हरियाली अमावस के मेल में डोलर लगाने वाले गफूरभाई अजमेर से 22 किलोमीटर दूर ठाठूठी गांव के रहने वाले हैं। आजादी के बाद से उनका परिवार इस व्यवसाय से जुड़ा हुआ है। वे मेवाड़-मारवाड़ के अलावा गुजरात, काठियावाड़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तक के मेलों में जाते हैं।

गफूरभाई की जबान पर डोलर की बजाय बार-बार 'बड़ा झूला' नाम आता देख वे बताते हैं कि जगह-जगह के लोग डोलर को अलग-अलग नामों से जानते हैं। मारवाड़ में इसे 'हींडा' यानी झूला कहते हैं। गुजरात में यह 'चक डोल' तो काठियावाड़ में 'फजर फालका' के रूप में जाना जाता है। मालवा में इसे 'रहट' कहते हैं। जैसे रहट पर गेड़ें एक-के-पास-एक बन्धी रहकर कुए से पानी लाती है वैसे ही जब डोलर तेज चलता है तो इसकी पालकियां एक-के-बाद-एक कर सवारियों को झूलाती हैं। महाराष्ट्र में तो ऊंचे आसमान तक इसका छोर देख इसे 'आसमानी झूला' ही कहते हैं।

गफूरभाई के अनुसार वे उदयपुर से अपनी यात्रा प्रारम्भ कर अन्यत्र लगने वाले मेलों में घूमते-घामते पुन: अपना अन्तिम पड़ाव उदयपुर के ही चीरवा घाटे के अमरख महादेव के मेले में देते हैं। यह मेला वैशाख में लगता है। यहां से वे अपने गांव जाकर ब्याह-शादी तथा अन्य कार्यों में लग जाते हैं।

समय के अनुसार डोलर ने भी विभिन्न पड़ाव देखे हैं। प्रारम्भ में काष्ठ निर्मित पालकी वाला डोलर चला। फिर इसी साइज का लोहे का डोलर आया। ये डोलर हाथ से चलाते थे। बारी-बारी से चलाने वाले होते। चलाते-चलाते पसीना-पसीना हो जाते।

दोनों तरफ दो व्यक्ति खड़े रहकर तुरताफुरती से ऊपर से आती पालकी को पकड़ झेलते और आगे ऊपर की ओर चलती करते। ऐसे रोटेशन बन जाता। बैठने वालों को हवा में झूलने का मजा आ जाता।

इसके बाद लोहे का ही बड़ा डोलर आया जो हाथ की बजाय पैरों से चलाते। इसमें हाथों की बजाय पैरों की मशक्कत रहती। इसके बाद डीजल पम्प से चलने वाला डोलर आया तो चलाने वालों ने राहत की सांस ली।

इससे चलाने की माथाफोड़ी से निजात मिली फिर मौत का कुआ आया। इसके लिए ठीक से जगह देखनी पड़ती है। गहरा कुआ होता है जिसमें गोल-गोल तेजी खाते मोटर साइकिल चलानी होती है। यह बड़ा रिस्की काम है। देखने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। चलाने वाला जरा सा चूका कि सीधा मौत के मुंह में।

गफूरभाई बताते हैं कि हमारे गांव में बनी डोलर से आज तक कोई हादसा नहीं हुआ। ऊपर वाले पर भरोसा रखकर ही चलना पड़ता है। बनाने वाले सब शकुन वगैरह देखकर डोलर बनाते हैं। हम भी चक डोलर पकड़ने से पूर्व ऊपर वाले को याद करते हैं।

चक डोलर के साथ कई मेलों में 'घोड़ा डोलर' भी देखने को मिलती है। इसकी बनावट छतरी की तरह गोलाई लिये होती है। छतरी की डांडी की तरह यह एक मोटे खम्भे से जुड़ी चारों ओर से गोलाई लिये होती है।

छतरी की तानियों की तरह इसकी छतनुमा पाट के चारों ओर फैलाव के अनुसार समान दूरी पर लोहे की मोटी छड़ें लटकी होती हैं। ये छड़ें काष्ठ निर्मित विभिन्न पशु-पक्षियों के आकार की शक्लें वाले शरीर के बीच कसी रहती हैं। झूलने वाले एक-एक छड़ को पकड़े सवारी किये झूला खाते हैं। तेज चलने पर सभी एक से हवा खाते प्रसन्न मुद्रा लिये दिखाई देते हैं।

- राजस्थान पत्रिका, 26 जुलाई 2006 से साभार

सत्ता-सुख

खार नमक में ही नहीं होता
आदमी में भी होता है
अधिक खार बनेबनाये स्वाद को
मिट्टी में मिला देता है
आदमी पर जब खार चढ़ता है
वह गधे को आदमी कह देगा
पर घोड़े को कबूल नहीं करेगा
जादू जब सिर से उतर जाता है
जूती दुश्मन बन जाती है
कपड़ा वैरी लगता है
सत्ता-सुख पान के पत्ते जैसा होता है
वह न फूल देता है न फल
राजनीति भी नीति विहीन राज हो जाती है
जैसे दीया राज होता है।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

विविधता लिए भारतीय नृत्य

- जगदीशचन्द्र माथुर -

भारतीय लोकनृत्यों के सम्बन्ध में विहंगम विवेचन करते जगदीशचन्द्र माथुर लिखते हैं- 'बहुत से शास्त्रीय नृत्यों का जन्म लोकनृत्यों से हुआ है। लोकजीवन ही लोकनृत्यों का प्रेरणा स्रोत है। उनके गांव के आचार-विचारों का पता चलता है। हमारे देश में सबसे अधिक नृत्य कामधंधों से सम्बन्धित हैं। बंगाल-बिहार के संथालों के नाच प्रतीकों का सहारा लिये फसल की कटाई-बुवाई को दर्शाते हैं। सौराष्ट्र के टिप्पणी में औरतें मुगरियों से फर्श कूटने का अभिनय करती हैं। आसाम की बोडोकछारी कैजामा पनई में जंगल में पेड़ काटने और उसके नीचे से लाल चींटियों को हटाने का उपक्रम करती हैं। शिकार पर अनेकों नृत्य बड़े जोरदार और मरदाने होते हैं।'

इसी प्रकार सामाजिक संस्कार वाले नृत्यों में असंख्य ग्रामीण जनता मंत्रतंत्र और चमत्कार चिकित्सा में विश्वास करती है। तेराताली ऐसा ही नृत्य है जिसका स्वर क्रमश: ऊंचा चढ़ाते अन्त में एकदम शिथिल हो जाता है। कुछ नाच डरावने और सम्मोहन लिये होते हैं। मिथिला की स्त्रियां अकाल निवारण के लिए जट-जटनी और आसाम की मच्छर भगाने के लिए महाहन करती है। विश्वंभरा भक्ति और भय दोनों उत्पन्न करती है।

मणिपुर का लाइहराओवा वहां की रासलीला से पूर्व का है। कुछ जातियों में युद्ध नृत्य नहीं होकर वे खेलकूद तथा व्यायाम का आभास देते हैं। केरल का वैलक्कली कुरुक्षेत्र की लड़ाई की प्रतीती कराता है। इसमें विजयी पाण्डवों के विशालकाय पुतले बनाये जाते हैं। पराजित कौरवों का अभिनय ढाल-तलवार लेकर किया जाता है। वास्तविक युद्ध नृत्य आसाम की लेखक जाति का सवलकिया आहत लोगों की आत्मा का नृत्य है। बस्तर के मुरिया में नृत्यों को खेल समझने की प्रवृत्ति है। इनके हुल्की, मन्द्री तथा करसना नृत्यों का सम्बन्ध धार्मिक कृत्यों से नहीं लगकर कोई अन्य गूढ़ अर्थ-अभिप्राय का संकेत लिये लगते हैं।

स्त्री-पुरुषों द्वारा जोड़ी बनाकर नाचने के अनेक ढंगों में किसी शैली को खोजना व्यर्थ है। पुरुष-स्त्रियां या तो अलग-अलग पंक्तियों में या दो के बीच एक लड़की मिलकर खड़े रहते हैं। जैंतिया पहाड़ी नृत्य में टोली रचना व हाथ पकड़ने के ढँग जटिल हैं जबकि संथालों में बड़े सरल और सीधे हैं।

यही नहीं, बिहार के ओरांव लोगों के कदम नृत्य ऐसे पड़ते हैं जैसे कोई कांतर अपने सौ पैरों से सरकती हो। आओ नागा पहले एक कदम दाहिने चलते हैं फिर एक कदम पीछे, फिर झटके से घुटना मोड़कर दाहिने पांव को दो बार जमीन पर पटकते हैं। हिमाचल प्रदेश के नृत्यों में नर्तक अपने पांव एक ही स्थान पर जमा कर रखते हैं और धड़ को ही वृत्ताकार घुमाते हैं।

नृत्य के समय ताली बजाने से, एक साथ पांव रखने में ही मदद नहीं मिलती, इसमें हाथों का सुन्दर उपयोग भी है जैसे गुजरात के गरबा नृत्य में। उत्तरप्रदेश के पर्वती नर्तकों के हाथ रूमालों और शालों से खेलते हैं। छड़ी भी यही काम देती है। महाराष्ट्र-गुजरात के गोफ नृत्य में नर्तक एक खंभे में बड़ी कुशलता से रंगबिरंगी डोरियां लपेटते और खेलते हैं। महाराष्ट्र की लेजिम से बड़ी अच्छी ध्वनि भी निकलती है और लय द्वारा अंग संचालन में भी सहायता मिलती है।

काष्ठ कबाड़ा से कंचन

अपने हाथों से नई अनूठी चीजों का निर्माण करने के कलाकारों के अलावा ऐसे कलाशिल्पी मिल जायेंगे जो केवल पुरानी काष्ठ निर्मित चीजों में नया प्राण फूंककर असल को भी मात करने में सिद्धहस्त हैं। ऐसे कलाकारों के हाथों में पड़कर जो कलारूप कबाड़खाना बने होते हैं वे नये नखोर होकर उभरते हैं।

ऐसे ही एक कलाकार वागड़ प्रदेश में डूंगरपुर जिले के जेठाना गांव के मंगलजी चुन्नीलाल सुथार का नाम चमक में है जो पुरानी चीजों को नया रूप देने के साथ पुरानी लकड़ी पर तरह-तरह की मूर्तियां, रथ की तलियां, देवी-देवताओं, अप्सराओं, महापुरुषों की प्रतिमाएं, हाथी, घोड़े एवं अलंकारिक दरबारी मूर्तियां, देशी रजवाड़ी परम्पराओं, मुगल शैली, राजपूत शैली आदि की मूर्तियां, काष्ठ की सूक्ष्म कलाकृतियां बनाने में सिद्धहस्त हैं।

मंगलजी के अनुसार सुथारी का घरेलू वातावरण पाते वे परम्परा से यह काम सीखे। सागवान तथा शीशम की लकड़ी पर अभ्यास करते इस काम में होशियार हो गये। पुराना कपड़ा खरीदकर लकड़ी को काट-छांट कर वे जैसी लकड़ी वैसा शिल्प बनाकर माहिर हो गये। उनकी रूचि और काम देख लोग उनकी सराहना करने लगे और समाज का काम भी देने लगे।

एकबार गलियाकोट के जैन मन्दिर का प्राचीन कलात्मक रथ जल गया तब मंगलजी द्वारा उसे नया नखोर रूप दिया गया। मुम्बई में जब उन्होंने प्राचीन व आधुनिक कृतियां देखीं तो उन्होंने भी कुछ कृतियां बनाई जो मुम्बई आर्ट गेलेरी में शोभित हैं।

- म. भा.

(जैसा कि उदयपुर में मंगलजी सुथार ने 24 सितम्बर 1988 को लेखक को बताया)

बाजार / समाचार

डॉ. भगवानदास राय प्रेसिडेन्ट चुने गए

उदयपुर (ह. सं.)। एसोसिएशन ऑफ ओरल एंड मैक्सीलोफेसियल सर्जरी के 46वें वार्षिक सम्मेलन का आयोजन इंदौर में गत दिनों हुआ। यह एसोसिएशन

8500 से ज्यादा मेंबर का संगठन है। इस कॉन्फ्रेंस में 1600 प्रतिभागियों ने भाग लिया जहां पर विभिन्न प्रकार के पेपर एवं पोस्टर प्रेजेंटेशन हुए। साथ ही एसोसिएशन कमेटी के चुनाव का आयोजन हुआ जिसमें पेसिफिक डेंटल कॉलेज देबारी उदयपुर के प्राचार्य डॉ. भगवानदास राय को प्रेसिडेंट के पद पर जीत हासिल हुई। डॉ. राय नई दिल्ली में नवंबर 2023 में 47वीं वार्षिक कांफ्रेंस में पदभार ग्रहण करेंगे। उदयपुर पहुंचने पर डॉ. राय के पेसिफिक डेन्टल कॉलेज में भव्य स्वागत किया गया।

सयाजी इंदौर ने ओडीसी इवेन्ट में आतिथ्यसेवा प्रदान की

उदयपुर (ह. सं.)। सयाजी इंदौर ने उदयपुर में आयोजित एक भव्य शादी समारोह में आउटडोर कैटरिंग सेवाएं प्रदान की। इस आयोजन में सयाजी इंदौर के अनुभवी शेफ के साथ-साथ किचन एवं सर्विस दोनों के 150 से अधिक कर्मचारियों की टीम मौजूद थी। इस इवेन्ट में ब्रेकफास्ट, लंच, हाई टी और डिनर सहित सभी भोजन अवधि के दौरान आठ हजार से अधिक मेहमानों को स्वादिष्ट व्यंजन और पेय पदार्थ परोसे गए।

रक्षित शर्मा, वाइस प्रेसिडेंट, ऑपरेशंस - सयाजी होटल्स लि. ने बताया कि हमारी टीम ने इस इवेन्ट को सफल बनाने में काफी योगदान दिया और हर प्रयास करते हुए, 250 से अधिक वेज डिशेज और 100 से अधिक नाम्न-वेज डिशेज के साथ रिफ्रेशिंग पेय पदार्थ और स्वादिष्ट मिठाइयां पेश की। इंदौर से उदयपुर तक टनों कच्चे माल की डिलीवरी उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी, जिसके लिए हमारी टीम ने कभी-कभी अपने सोने की भी परवाह नहीं की। सयाजी इंदौर अपने मेहमानों को सर्वोत्तम सुविधाएं प्रदान करता है और ऐसी मेहमाननवाजी सुनिश्चित करता है, जहां लक्ज़री और सुकून से भरा माहौल आपका स्वागत करता है। सयाजी इंदौर में पकवानों के बेहतरीन अनुभवों तथा शादियों, सम्मेलनों और अन्य कार्यक्रमों के मौके पर दावत के आयोजनों के लिए खानपान के अद्भुत विकल्प उपलब्ध हैं।

साइबर सुरक्षा की जानकारी दी

उदयपुर (ह. सं.)। ट्रूकॉलर ने साइबरपीस फाउंडेशन के सहयोग से 'ट्रूसाइबरसेफ' अभियान के अंतर्गत डिजिटल सुरक्षा पर केंद्रित पहले नुक्कड़ नाटक का आईआईएस (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) में आयोजन किया। इस संयुक्त प्रयास का उद्देश्य जागरूकता फैलाना और लोगों को साइबर धोखाधड़ी से निपटने के लिए प्रशिक्षित करना है। मुख्य अतिथि वरिष्ठ कानून प्रवर्तन अधिकारी राजीव शर्मा आई.पी.एस., अतिरिक्त डी.जी.पी. सह निदेशक, राजस्थान पुलिस अकादमी, विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कर्नल अरविंद राजहंस, सलाहकार, साइबर पीस फाउंडेशन थे। कार्यक्रम में छात्रों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर साइबर खतरों और बढ़ती धोखाधड़ी पर जागरूक किया।

ट्रूकॉलर की पब्लिक अफेयर्स की निदेशिका प्रज्ञा मिश्रा ने कहा कि फरवरी में 'ट्रूसाइबरसेफ' अभियान शुरू करने के बाद अब तक ऑनलाइन और ऑफलाइन 10 लाख से अधिक नागरिकों को हम प्रशिक्षण प्रदान कर चुके हैं। राजीव शर्मा ने कहा कि प्रति वर्ष 1.5 मिलियन साइबर अटैक्स होते हैं। इसका समाधान जागरूकता है। सभी को उपकरणों के उपयोग के साथ साइबर ख़तरों की जानकारी होनी चाहिए।

अमिताभ बच्चन नेक्सस मॉल्स के ब्रांड ऐम्बैसेडर बने

उदयपुर (ह. सं.)। नेक्सस मॉल्स ने अमिताभ बच्चन को अपना 'हैप्पीनेस ऐम्बैसेडर' बनाने की घोषणा की है। यह एक अभूतपूर्व, अपने किस्म की अनूठी भागीदारी है जिसमें भारत के सबसे बड़े ग्लोबल सुपरस्टार ग्राहकों को 'हर दिन कुछ नया' अनुभव से रूबरू कराएंगे।

नेक्सस मॉल्स के सीईओ दलीप सहगल ने कहा कि अमिताभ बच्चन की हर उम्र के लोगों के साथ जुड़ाव कायम करने की क्षमता कमाल की है। भारत के सबसे बड़े आइकॉन्स में से एक के साथ भागीदारी से हमें अपने ग्राहकों तक 'हर दिन कुछ नया' अनुभव अनूठे ढंग से पहुंचाने में बहुत मदद मिलेगी। अमिताभ बच्चन ने कहा कि नेक्सस मॉल्स को ऐंडोर्स करने का अवसर मिलने पर मैं बहुत प्रसन्न हूं। हम मिलकर ग्राहकों को हर दिन कुछ नया अनुभव देने की कोशिश करेंगे और यही नहीं बल्कि हम उनके लिए नए-नए अनुभवों की रचना भी करेंगे ताकि अगली बार वे जब भी नेक्सस मॉल्स में जाएं उन्हें कुछ नया अनुभव प्राप्त हो। वर्ष 2016 में अपनी स्थापना के बाद से नेक्सस भारत का सबसे बड़ा रिटेल प्लैटफॉर्म बन चुका है जिसके पास 13 शहरों में 17 प्रॉपर्टीज़ हैं। जून 2022 में नेक्सस मॉल्स ने एक नई ब्रांड पहचान का विमोचन किया जो आनंद, उत्साह, ताज़गी, ज़िंदगी और जादू - तथा सबसे अहम खुशी की नुमाइंदगी करती है।

शुगरबॉक्स राजस्थान के गांवों को बना रहा डिजिटल

उदयपुर (ह. सं.)। शहर से 50 किलोमीटर दूर स्थित गांव पलाना खुर्द भले ही पहले तकनीकी सेवाएं हासिल करने में बेहद पीछे था, लेकिन आज वह इस चुनौती को पार कर सफलता की पहली सीढ़ी चढ़ चुका है। पलाना खुर्द गांव में रहने वाले लोगों तक डिजिटल सेवाएं पहुंचाना किसी चुनौती से कम नहीं था लेकिन शुगरबॉक्स के कॉमन सर्विस सेंटर की मदद से इस चुनौती को पार कर शहरी-ग्रामीण डिजिटल विभाजन के मौजूदा अवसरों को गांव के लोगों तक उन्हीं की भाषा में मुहैया करवाया है। जो डिजिटल इंडिया युग के समय की अहम मांग है।

इस संभावना को हकीकत में बदलने के लिए कॉमन सर्विस सेंटर, भारत सरकार की ई-गवर्नेंस को श्रेय जाता है। यह पहल एक सकारात्मक कदम है। शुगरबॉक्स के साथ इसकी साझेदारी इसे विश्वस्तर का पहला हाइपरलोकल क्लाउड प्लेटफार्म बनाती है। 4000 लोगों की आबादी वाले इस गांव में डिजिटल युग की उक्त सेवा वर्ष 2022 में अक्टूबर माह से आरंभ हुई है। कुछ ही सप्ताह के भीतर गांव वाले इस तकनीकी युग के आदी हो गए हैं। अपने मनोरंजन के लिए वह फिल्म, वैबसीरीज देख रहे हैं और देश व दुनियाभर का ज्ञान अपने गांव में बैठे हासिल कर रहे हैं। इसके माध्यम से छात्र भी विभिन्न प्लेटफार्म जैसे मैगनेट ब्रेन, मिशन ज्ञान आदि का प्रयोग कर भावी संभावनाओं के लिए खुद को तैयार कर रहे है।

गांव की सरपंच, तुलसीबाई भील ने कहा कि भौगोलिक स्तर पर पिछड़े हुए गांवों तक तकनीक को पहुंचाना सराहनीय प्रयास है। इससे हमारे बच्चे बेहतर शिक्षा के विकल्प खोज कर सुनहरे भविष्य की तैयारी कर सकेंगे। इसके अलावा फिल्मों व वैब सीरीज की मदद से लोगों का मनोरंजन होने के साथ तथा उनके ज्ञान का विस्तार भी होगा।

सीईओ और सह संस्थापक रोहित परांजपे ने कहा कि शुगरबॉक्स डिजिटलकरण की शक्ति के लोकतंत्रीकरण के मकसद से आगे बढ़ रहा है। जहां हम हाइपरलोकल और प्रासंगिक अनुभवों को बिलकुल शून्य डिजिटल क्नैक्टिविटी क्षेत्र तक लाने का प्रयास कर रहे है। हमें गर्व है कि ऐसे क्षेत्रों में हमने छात्रों के लिए ऐड टैक मंच के जरिए बेहतर संभावनाएं खोल दी है। पलाना खुर्द की बात करें तो वहां मोबाइल डाटापैक के प्रयोग के बिना पोडकास्ट, खबरें, शैक्षणिक कान्टैंट मुहैया करवाया जा रहा है।

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) की हाल ही में जारी रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के शहरी इलाकों में प्रत्येक 100 लोगों में से 109 इंटरनेट ग्राहक है। वहीं दूसरी तरफ ग्रामीण इलाकों में यह संख्या महज 36 है। इस डिजिटल विभाजन की वजह या नेटवर्क क्नेक्टिविटी बेहतर खराब या डिजिटल सेवाओं और सूचनाओं तक पहुंचने के साधन बेहद कम हैं। सीएससी इस डिजिटल विभाजन को कम करने में अहम भूमिका निभा रहा है। शुगरबॉक्स के जरिए केवल राजस्थान ही नहीं बल्कि देश के अन्य राज्य उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि में 300 से अधिक ग्राम पंचायतों तक पहुंच की जा रही है।

एचडीएफसी बैंक और फ्लाईवायर में गठबंधन

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक लि. ने ग्लोबल पेमेंट्स इनेबलमेंट एवं सॉफ्टवेयर कंपनी, फ्लाईवायर कॉर्पोरेशन (फ्लाईवायर) के साथ साझेदारी की। इस साझेदारी द्वारा भारतीय पूरी दुनिया में उच्च शिक्षा के संस्थानों को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा शुल्क डिजिटल माध्यम से भुगतान कर सकेंगे।

जतिंदर गुप्ता, बिज़नेस हेड - रिटेल ट्रेड एवं फॉरेक्स, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि फ्लाईवायर के साथ साझेदारी करने और भारतीय विद्यार्थियों को भुगतान के विस्तृत विकल्प प्रदान करने की खुशी है। विद्यार्थियों और उनके परिवारों को अंतर्राष्ट्रीय भुगतानों का सुविधाजनक व सुरक्षित प्रबंधन करने में मदद करेगा, और वे भारत एवं विदेशों में आसानी से भुगतान कर सकेंगे। मोहित कंसल, वीपी, ग्लोबल पेमेंट्स, फ्लाईवायर ने कहा कि इसके द्वारा भुगतान करना बहुत आसान हो गया है क्योंकि इसने सामान्य रूप से लगने वाले समय और डॉक्युमेंटेशन को घटा दिया है। फ्लाईवायर की पेमेंट टेक्नॉलॉजी और एचडीएफसी बैंक के विस्तृत बैंकिंग नेटवर्क के मिश्रण ने भारतीयों के लिए ओपन-बैंकिंग के अनुभव का निर्माण किया है, और आम तौर से कागजातों पर आधारित प्रक्रिया को पूरी तरह से ऑनलाईन कर दिया है।

पिम्स में दाहिने फैंफड़े की गांठ का सफल उपचार

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज (पिम्स) हॉस्पिटल उमरड़ा में चिकित्सकों ने वृद्ध मरीज के दाहिने फैंफड़े में गांठ का सफल उपचार किया है।

पिम्स के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों 64 वर्षीय वृद्ध को दम चढ़ने, खांसी, बलगम, भूख न लगने तथा शरीर का वजन कम होने की समस्या के चलते पिम्स हॉस्पिटल के रेसपेट्री मेडिसिन विभाग में भर्ती कराया गया। जांच में पता चला कि मरीज का दाहिना फैंफड़ा पिचका हुआ और छाती में पानी भरा हुआ है। साथ ही मरीज के दाहिने फैंफड़े में 10 गुना 11 गुना 16 सेंटीमीटर की गांठ है जो श्वांस नली और फैंफड़े को दबा रही थी। इस पर गांठ निकाल फैंफड़े की धुलाई कर पानी निकाला गया। ऑपरेशन रेसपेट्री मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ. अब्दुल वहाब, डॉ. सानिध्य, डॉ. राहुल खत्री, डॉ. प्रांशु, डॉ. ऋषभ व टेक्निशियन गिरीराज की टीम द्वारा किया गया। श्री अग्रवाल ने बताया कि रोगी अब पूर्णत: स्वस्थ है और उसका ईलाज भामाशाह योजना के अंतर्गत पूर्णत: नि:शुल्क हुआ है।

टाटा मोटर्स और एचडीएफसी बैंक में साझेदारी

उदयपुर (ह. सं.)। देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने का चलन बढ़ाने के प्रयास में टाटा मोटर्स ने एचडीएफसी बैंक के साथ साझेदारी की है। इस साझेदारी के तहत एचडीएफसी बैंक अधिकृत पैंसेजर ईवी डीलर्स को इलेक्ट्रिक व्हीकल डीलर फाइनेंसिग सॉल्यूशन मुहैया कराएगा।

इस योजना के तहत टाटा मोटर्स रेपो रेट से जुड़े लेंडिंग रेट (आरएलएलआर) आकर्षक दाम के साथ अपने डीलर्स को अतिरिक्त इनवेंट्री फंडिंग भी प्रदान करेगा, जो उनकी आईसीई की फाइनेंस लिमिट से ज्यादा है। लोन लौटाने की अवधि 60 से 75 दिन की होगी। उच्च मांग के चरणों की जरूरत को पूरा करने के लिए, बैंक अतिरिक्त लिमिट भी देगा, जो डीलर्स को एक साल में तीन बार उपलब्ध होगी। इस साझेदारी के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर टाटा पैसैंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लि. में चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर और टाटा पैसेंजर व्हीकल्स लि. के डायरेक्टर आसिफ मालबरी और एचडीएफसी बैंक के ग्रुप हेड-रिटेल एसेट्स अरविंद कपिल ने किए। मालबरी ने कहा कि यह साझेदारी यातायात के प्रदूषण मुक्त साधनों को हासिल करने को हमारे विजन में सहयोग प्रदान करेगा। साझेदारी से हमारे उपभोक्ताओं के लिए इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने का अनुभव और आसान हो जाएगा।

पत्रों के आलोक में (2)

बसन्त निरगुणे, भापोल के पत्र

बसन्त निरगुणे से मेरा पहला मिलना इन्दौर की एक संगोष्ठी में हुआ। यह बात सन् 1980 के पूर्व की है। उसके बाद वे भोपाल चले गये। फिर तो कई जगह संगोष्ठी-समारोह में मिलना हुआ। उनके कई पत्रों में कुछ चुने हैं। ये पत्र 1980 से 2009 तक के हैं। एक पत्र इन्दौर का है जिसमें मेरे द्वारा प्रकाशित कविता-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' पर लिखी टीप है। यह पत्र 22 नवम्बर 1980 का लिखा है।

भाईश्री भानावतजी

सस्नेह वन्दे

लोकपरम्परा से हटकर इस कृति में डॉ. महेन्द्र भानावत अलग ही पहचान लेकर उतरे हैं। लोकविधाओं में प्रख्यात डॉ. भानावत बड़ी धमक से कविता के क्षेत्र में उतरे हैं। धमक से इसलिए कि डॉ. भानावत कविता से कभी कटे हुए नहीं रहे बल्कि खुली आंखों से कविताई आन्दोलनों को देखते रहे। कविता का दृष्टा होना भी बहुत बड़ी बात है। यह तथ्य बिल्कुल सही है कि किसी साहित्यकार की शुरूआत कविता से होती है। इसमें डॉ. भानावत अछूते नहीं हैं।

'कोई-कोई औरत' की चिन्ता समष्टिगत है। इसलिए यह साहित्य की स्वागतेय कृति है। स्वागतेय इसलिए भी कि 'कोई-कोई औरत' का रचनाकार कोई नया सिक्कड़ कवि नहीं है। वह साहित्य में रचा-पचा कवि है। साफ-सुथरा, बेबाक, बेलोस तरीके से बात करने, कहने, सुनने तथा सहने की जिसकी आदत है इसलिए यह रूप श्री भानावत की कविता में सहज रूप से आ गया है। डॉ. भानावत की कविता सायास द्रविड़ प्राणायाम नहीं लगती बल्कि संजीदा तरीके से, सलीके से व्यवहार करती है। कविवर बच्चन की एक बात मुझे याद आ रही है-

कविता से
तुम रोटी नहीं पाओगे,
परन्तु
रोटी सलीके से खाओगे।

मैं यूं कहूं कि डॉ. भानावत ने अपनी रोटी को सलीके से खाया है तो अत्युक्ति नहीं है। भाषा को लोक के वजनी और गहराई तक उतरने वाले शब्दों से न केवल ताजगी मिली है बल्कि कविता लोक से कहीं हटी नहीं है जो डॉ. भानावत का लोक है। सम्पूर्ण कविताओं में अटपटापन तो है ही साथ ही व्यंग्य की रेगिस्तानी सिकता की मार भी है। जैसे-

(क) होली की झाल से / लम्बे और गरम दिन /
जले हुए आदमी की तरह / झुलसा रहे हैं।
(ख) तुम्हारा पेट तिजोरी बन गया है।

यह पत्र 22 जुलाई 1992 का है। इस पत्र के साथ मेरी तीनों पुस्तकों पर लिखी समीक्षाएं भी भेजीं जो 'सुलगते प्रश्न' के लिए प्रकाशनार्थ थीं। यह पत्र यहां सुरेन्द्र शर्मा द्वारा प्रकाशित होता था। मुझे उन्होंने इसके सम्पादन का कार्य दे रखा था। अन्य साप्ताहिकों से इसकी अधिक चर्चा इसलिए भी रही कि यह साहित्यिक सामग्री से भरपूर नियमित अनेक तरह की जानकारियां लिए प्रकट होता था। अपने पत्र में निरगुणेजी लिखते हैं -

मीठा-मीठा मिश्री-सा आपका पत्र मिला। मैं राजस्थान को रेत का ही नहीं, कलाओं का भी साम्राज्य मानता हूं। सांस्कृतिक परिदृश्य में राजस्थान की लोककलाओं और ललितकलाओं का जो वैभव है, हमारे लिये क्या? सबके लिए गौरव की बात है। हर क्षेत्र में अगवा तो रंगीला राजस्थान ही है। हमारे यहां अब शुरू हुआ है कलाओं को समझना।

यह पत्र 18 नवम्बर 1992 का लिखा है जब निरगुणेजी भोपाल की मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद में प्रदर्शन प्रभारी थे। उनके लिखने पर मैंने वहां उदयपुर से एक गवरी दल प्रदर्शनार्थ भेजा था। इसी आदिवासी भीलों में प्रचलित आनुष्ठानिक गवरी नृत्य में मैंने शोधप्रबन्ध लिखकर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी।

गवरी दल के साथ मैंने अपनी तीन पुस्तकें तथा रंगायन के कुछ अंक भी भेजे थे। उन्होंने लिखा-

आपकी दुर्लभ सौगात मिली। साथ ही पहलीबार गवरी लोकनाट्य को आंखों से देखने का अवसर भी मिला। गवरी का यहां प्रदर्शन अच्छा रहा। राज्यपाल ने सभी कलाकारों को चाय-पान पर बुलाया था। वहां भी गवरी का प्रदर्शन सुन्दर रहा। कभी परिषद की ओर से भी मैं बुलाऊंगा गवरी को।

निरगुणेजी का 12 फरवरी 1995 का यह पत्र -

संगोष्ठी रपट मिली। आप लगातार यात्रा कर रहे हैं। घूमना-फिरना मनुष्य को कितना कुछ दे जाता है, इसे कोई घुमक्कड़ ही समझ सकता है। यहां रामलीला मेले में आपकी काफी प्रतीक्षा करते रहे। आप आते तो रामलीला और कलमकारी केन्द्रित रामकथा चित्रावली प्रदर्शनी देखते। मैं केवल अनुरोध ही कर सकता था।

निमाड़ की गणगौर पर एक पुस्तिका है जिसमें 100 गीत हैं। मेरा एक लम्बा आलेख है। उसमें आपके कुछ सन्दर्भ मैंने साभार लिये हैं। प्रेषित किया है, चौमासा का निमाड़ की संस्कृति पर केन्द्रित अंक और गणगौर। एक पांच फीट की कावड़ बनवाना है जिस पर पूरी बड़े आकार में रामायण चित्रित होगी। उसकी अनुमानित कीमत कलाकार से पूछकर बतायें।

नोट - 22 फरवरी 1995 को मैंने पत्र लिखकर कावड़ की कीमत 6 हजार लिख भेजी।

निरगुणेजी को मैंने अपनी सद्य पुस्तक 'लोककलाओं का आजादीकरण' भेजी। इसमें कवर फ्लैप पर मैंने अपनी जीवनसंगिनी का फोटो देकर समर्पण में ये काव्य-पंक्तियां लिखी थीं-

पता नहीं तुम कहां संगिनी!
जीवन की बगिया थोथी।
आखर-आखर, आंसू-आंसू
मैंने बुनदी यह पोथी।।

उसके उत्तर में निरगुणेजी ने 20 मई 2002 के पत्र में लिखा-

पूना में मालती दीदी (शर्मा) से आपके बारे में बहुत देर तक बात हुई। पुस्तक में भाभी का फोटोग्राफ देखकर वह भाव-विह्वल हो गई थीं। स्त्री भावुकता का क्या करेंगे? आज रामनारायण उपाध्याय का जन्मदिन है।

आपका
बसंत निरगुणे

नोट : 'लोककलाओं का आजादीकरण' पुस्तक का लोकार्पण राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय अशोक गहलोत द्वारा 11 जून 2002 को किया गया।

निरगुणेजी का लिखा 10 जनवरी 2003 का एक पोस्टकार्ड बड़ा ही मार्मिक है। वे लिखते हैं-

आदरणीय भाई भानावतजी

पिछले दो माह अधिक यातना में, जीवन-मरण के संघर्ष में बीते। इस बीच मुझे दो बार मौत से सामना करना पड़ा। दो बार हार्ट अटैक आया। ईश्वर की महती कृपा रही कि दोनों बार उसने बचा लिया अन्यथा आपको इस समय पत्र नहीं लिख रहा होता। इसमें आप जैसे बड़े भाइयों की सद्भावना और स्नेह का भी योगदान है। जितना जीवन अब शेष है उसमें बचे कार्य पूरे करने हैं। ईश्वर ने समय दिया है, वह बहुत दयालु है। 17 दिसम्बर को इन्जोग्राफी हुई और 31 दिसम्बर को इन्जोप्लास्टी हुई जिसमें एक बन्द आर्टिजटी को साफ किया गया।

नोट - इस पत्र के जवाब में मैंने 31 जनवरी को पत्र लिखा।

इसके उत्तर में 04 फरवरी 2003 के पोस्टकार्ड में निरगुणेजी लिखते हैं-

श्रद्धेय भाई भानावतजी

आपके पत्र और बाद में फोन के मीठे बोलों ने मुझे जीने का असीम सम्बल दिया है। फिर से जीवन की मुख्य धारा में आने की कोशिश कर रहा हूं। चार महीने पूरी निष्क्रियता के गये। गाड़ी पटरी पर आने में थोड़ी देर लगेगी क्योंकि अभी न पढ़ना न लिखना हो रहा है।

लोकसाहित्य, संस्कृति और लोककलाओं पर लिखने वाले बहुत कम लोग हैं। लोकसाहित्य के अध्येता का एक अखिल भारतीय सम्मेलन होना चाहिये जिसमें कुछ गम्भीर विचार-विमर्श होना चाहिए। आप किसी संस्था से यह काम ले सकते हैं।

आपका
बसंत निरगुणे

सामान्य कागज तथा पोस्टकार्ड के अलावा निरगुणेजी का 04 अप्रेल 2009 का यह पत्र हेंडमेड कागज पर लिखा हुआ है। इसके चुनिन्दा अंश इस प्रकार हैं-

आदरणीय भाई

सादर वन्दन

'निमाड़ी लोककथाएं' आपके लोक आनन्द के लिए भेज रहा हूं। मेरी पहली प्रतिबद्धता निमाड़ी संस्कृति, साहित्य और कला के संरक्षण तथा विस्तार की है इसीलिए अब मेरा ध्यान निमाड़ की वाचिक-परम्परा के संकलन की ओर केन्द्रित है। मेरा संकल्प है कि श्रद्धेय रामनारायण उपाध्याय से आगे काम करूं। जिस मिट्टी का मैंने अन्न-जल ग्रहण किया है, उसके प्रति भी कुछ कर्ज चुकाना है ही फिर अपने समय को भी जवाब देना पड़ेगा।

इसलिए इन दिनों निमाड़ और निमाड़ी संस्कृति की बातें ही मेरी स्मृति का हिसाब हो गई हैं। यह होना ही चाहिये। जो जहां का होता है, वहां का लोक व्यक्ति को केवल लपेटता ही नहीं बल्कि उसके भीतर बसा होता है इसलिए व्यक्ति अपने लोक को अधिक अच्छे से व्यक्त कर सकता है।

आपका
बसंत निरगुणे

पिम्स के पीएचडी स्कॉलर के शोधकार्यों की सराहना

उदयपुर (ह. सं.)। एसोसिएशन ऑफ क्लिनिकल बायोकेमिस्ट ऑफ इंडिया द्वारा 24 से 26 नवंबर तक आईसीएआर कन्वेंशन सेंटर

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर, नई दिल्ली में 'रोगी देखभाल को बढ़ाने के लिए बुनियादी और आणविक अनुसंधान का उपयोग' विषय के साथ 48वें एसीबीआईसीओएन 2022 राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोध विद्वानों ने भाग लिया।

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा, उदयपुर के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि सम्मेलन में जैव रसायन पीएचडी विद्वानों के शोधकार्यों की प्रतिनिधियों ने सराहना की। इसमें पिम्स बायोकेमिस्ट्री पीएचडी स्कॉलर रजनीश, अंकिता सोनी, सुप्रिया और निधि राणावत ने बायोकेमिस्ट्री विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सुमन जैन के नेतृत्व में पोस्टर सेक्शन में अपने शोध कार्य प्रस्तुत किए। वार्षिक एसीबीआईसीओएन फैलोशिप के सफल समापन पर डॉ. सुमन जैन को नीति आयोग के सदस्य डॉ. विनोद कुमार पॉल द्वारा सम्मानित किया गया।

डॉ. विमला भंडारी की दो कृतियों को राष्ट्रीय पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल से 13 अखिल भारतीय स्तर एवं 15 प्रादेशिक स्तर पर विभिन्न विधागत कृतियों पर वर्ष 2020 के पुरस्कारों की घोषणा की गई है। इसमें सलिला संस्था, सलूंबर की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी द्वारा लिखित 'अध्यात्म का वह दिन' पुस्तक को एक लाख रुपये, शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया जाएगा। यह पुस्तक इससे पूर्व अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में भी एक लाख रुपये एवं 100 ग्राम का रजत पदक प्राप्त कर चुकी है। डॉ. भंडारी की बालसाहित्य की कृति 'उड़ने वाले जूते' शान्ति अग्रवाल पुरस्कार प्रतियोगिता की विजेता घोषित हुई है। यह पुरस्कार 25 दिसंबर को दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदान किया जाएगा।

वीआईएफटी के छात्रों ने किया संगम इंडस्ट्री का दौरा

उदयपुर (ह. सं.)। वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टैक्नोलोजी व मास कम्युनिकेशन (वीआईएफटी)

के छात्रों ने शनिवार को भीलवाड़ा की संगम इंडस्ट्री का दौरा किया। चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने कहा कि छात्रों ने संगम इंडस्ट्री के सभी विभागों का दौरा किया और धागों से कपड़े निर्माण होने संबंधी कार्यविधि की जानकारी प्राप्त की। यह दौरा छात्रों के लिए महत्वपूर्ण अनुभव लिए रहा।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (21)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

कली- चौथे पन पाये सुतचारी
सुनी मुनीधर ध्यान धायो है
जिया सोच में राजपाट धन धाम
कहो तो सब तुम को सौंपाय दऊ।
सब से प्यारे प्राण देह को मांग लेको तो त्याग दऊं।
रक्षा करन चलूं संग बन में असुरन को संहार दऊं।
बारे है कुंवर मेरे प्यारे हैं वार नहीं झिलैगो
अब ही रन में अवधिपति के बचपन।
सुने जब राजऋषि मन क्रोध कियो फड़कन लागे
अधर फेर सिंहासन ते उठ चल दियो
हरिश्चंद्र और तिरसंकू का दशरथ से सब हाल कियो।
नहीं मानूंगो मंत्र एक तानूंगो भसम कर देऊंगो
अवधि छिन में गुरु विशिष्ट ने रोक लिए जब ऊंच नीच
समझाये हैं दशरथ को समझाय फेर वाने राम लखन बुलवाए हैं।

राजऋषि आगे कर दिए मन में बहुत सिहाये हैं।
दियो है हाथ में हाथ साथ चल दिए हैं मुनि बन में
मुनि ने ताड़क दई बताई,
प्रभु ने पल में मार गिराई
आये वार में आगे निशाचर करी रखवारी।
गोतम नार अहिल्या तारी चरनन में।
हो जी नाथ तेरी महिमा सेवक बुद्धि है नादान।
गुरु बच्ची का रखना ध्यान
गावें ख्याल गहन में गावें।

करोली में इन ख्यालों के अखाड़े और उनके संचालक इस प्रकार हैं -

(1) हनुमान थोक- कजोड़ीलाल शर्मा (2) करमेती थोक- परमानंद डोम, (3) गणेश थोक- रमेशचन्द्र शर्मा (4) चटीकनागढ़- सत्यनारायण (5) जगन्नाथजी का गढ़- बाबूलाल शर्मा (6) टोरीवाला गढ़ के कन्हैयालाल ब्राह्मण।

इनमें से प्रारम्भ के तीन तुर्रा अखाड़े से तथा शेष तीन कलंगी अखाड़े से भी सम्बन्धित हैं। इन अखाड़ों के अतिरिक्त भी इस क्षेत्र के आसपास के गांवों में भी हेला ख्यालों के कई अखाड़े हैं। इन गांवों के कुछेक नाम इस प्रकार हैं- मासलपुर, खेड़िया, शुभनगर, मावली, भांकरी, लैदोर, नरायणा, वैराई तथा चैनपुर।

भरतपुर, 17 मई, 1969 :

नौटंकी :

नौटंकी ख्याल के प्रचलन के सम्बन्ध में लोकजीवन में कई बातें प्रचलित रही हैं। इनमें से कुछेक का उल्लेख यहां कर देना समीचीन होगा।

(1) पंजाब के बादशाह की एक अत्यन्त रूपवती शाहजादी थी। वह इतनी नाजुक और कोमलांगी थी कि प्रतिदिन केवल नौटंका भर आहार ग्रहण करती और फूलों से तुलती थी। नौटंका आहार लेने के कारण लोकजीवन में यह शाहजादी नौटंकी के नाम से लोकप्रिय हुई। एक दिन एक पंजाबी युवक को उसकी भाभी ने ताना मारा कि 'बड़े हुकुम और हाजरी चाहने वाले बनते हो तो नौटंकी ब्याह कर क्यों नहीं ले आते?' युवक को भाभी की यह बात चुभ गई।

एक दिन वह जनाना वेश धारण कर किसी हिकमत से नौटंकी के पास पहुंच गया। अपने समान भाव और रूप रंग पाकर नौटंकी ने उसे अपनी सहेली के रूप में रख लिया। रात जब नौटंकी को काम ने आ सताया तो उसने अपनी सहेली से कहा कि यदि इस समय कोई पुरुष होता तो कितना अच्छा रहता? नौटंकी के ऐसा कहते ही युवक अपना जनाना वेश त्याग असली पुरुष वेश में आ गया। उस रात दोनों एक ही सेज पर सोये। प्रतिदिन की भांति प्रात: होते ही मालिन आई और नौटंकी को फूलों से तोली तो उस दिन उसका वजन बढ़ा हुआ पाया।

बादशाह को जब यह ज्ञात हुआ तो वह बड़ा आगबबूला हुआ। उसने तत्काल ही नौटंकी को बुलवाया और वजन बढ़ने का प्रयोजन पूछा। नौटंकी ने अपने पिता को सही सच सारी बात कह सुनाई। बादशाह ने उस युवक को सूली का हुक्म दिया। नौटंकी घबराई। वह मर्दाना वेश धारण कर वध-स्थल पहुंची। जल्लादों को ज्योंही बादशाह ने कत्ल का हुक्म दिया नौटंकी अपना मर्दाना वेश उतार कर असली रूप में आ खड़ी हुई और तख्त से जल्लादों को नीचे गिरा अपने पिता से कहने लगी कि या तो आप इसे क्षमा कर दीजिये या फिर इसके साथ मुझे भी फांसी का हुक्म दीजिये। पिता ने अपनी बेटी की बात मान युवक को क्षमा दान दे दिया और तत्काल ही उसके साथ नौटंकी की शादी करादी।

(2) कुछ लोग कहते हैं कि प्रारम्भ में इन ख्यालों में नौ प्रकार के वाद्य बजाये जाते थे इस कारण ये ख्याल नौटंकी के ख्याल कहलाये।

(3) एक मत यह भी है कि नौ प्रकार के वाद्य नहीं बजाये जाकर इन ख्यालों में नौ नक्काड़े-नक्काड़ियों का प्रयोग किया जाता था। नक्काड़ों की प्रधानता के कारण इन ख्यालों को 'नक्काड़ेबाजी के ख्याल' कहते हैं।

(4) यह भी सुनने में आया है कि प्रारम्भ में नौटंकी के खेलों में नक्काड़ों का काम तो प्रमुख था ही परन्तु नक्काड़ों के साथ-साथ ढोलक, ढपली, सारंगी तथा चिकारा भी बजाया जाता था। इनके बजाने वाले कुल 9 साजिन्दे रहते थे। साजिन्दों में तीन नक्काड़े बजाने वाले, दो ढोलक वाले, दो ढपली वाले तथा एक-एक सारंगी तथा चिकारा बजाने वाले होते थे। इसलिए कालांतर में ये ख्याल नौटंकी ख्यालों के रूप में प्रचलित हुए।

उपर्युक्त सभी बातें नौटंकी के उद्भव एवं विकास के कई पक्षों को उद्घाटित करती हैं। पंजाब की नौटंकी की प्रेमाख्यान विषयक कथा लोकजीवन में इतनी लोकप्रिय हो गई कि क्या बाल, क्या वृद्ध, क्या युवा प्रत्येक के कलकण्ठों पर गीत, गाथा, कथा, आख्यान के रूप में सुनाई दी जाने लगी। इस कथा का आधार लेकर कई ख्याल भी प्रचारित हुए। इन ख्यालों का इतना जबर्दस्त प्रचार हुआ कि ख्याल लेखकों ने लोकजीवन में प्रचलित अन्य कथा-आख्यानों के आधार पर कई ख्यालों की रचना कर उन्हें भी उसी शिल्प-शैली में प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि नौटंकी के ख्यालों के साथ वे सभी ख्याल भी समानधर्मी मंच, अभिनेता, शिल्प, सज्जा और तन्त्र में प्रस्तुत होने के कारण नौटंकी ख्याल के रूप में समादृत हुए।

राजस्थान में नौटंकी के ख्यालों का प्रचलन भरतपुर तथा डीग में सर्वप्रथम भुरीलाल ने किया। ये जाति के स्वर्णकार थे और डीग के रहने वाले थे। नौटंकी ख्यालों के प्रसिद्ध लेखक नत्थाराम इनके बाद के हैं। भुरीलालजी ने सबसे पहले हाथरस में मुरलीधर हरनारायण की मण्डली में नौटंकी ख्याल करने प्रारम्भ किये। उस समय मुरलीधर हरनारायण का नौटंकी का सधा हुआ बड़ा नामी शौकिया दल था। ये दोनों ही अच्छे खिलाड़ी एवं ख्याल लेखक थे।

इनके लिखे नौटंकी, लक्ष्मण शक्ति, रूक्मणी मंगल, मलखान का ब्याह, ढोलामारू, लवकुश काण्ड, गुंजभरी तथा भाईगीर नामक

ख्यालों ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। दोनों बहुत सफल एवं सम्पन्न व्यापारी थे। ख्यालों का इन्हें अच्छा शौक था इसलिये शौकिया रूप में ही अच्छे कलाकार जुटाकर उन्हें बहुत अच्छा पारिश्रमिक देते थे और हाथरस में ही नौटंकी ख्यालों का मजमा जुटाते थे। इनका गुंजभरी तथा भाईगीर नामक ख्याल तो सिनेमा के गानों की तरह लोकप्रिय हुए। भाईगीर का अभिनय भुरीलालजी ही करते थे। कहते हैं कि भाईगीर के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर एक बार लोगों ने हाथी पर इनकी सवारी निकाली। अकेले भुरीलालजी ने मुरलीधर हरनारायण की नौटंकी के लगभग चालीस ख्यालों में भाग लिया। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इनका यह दल कितना सजीव, सशक्त और शक्तिशाली रहा होगा।

डीग में इनके प्रदर्शनों ने जनता पर जादू छा दिया। लोग दूर-दूर से इनके खेलों को देखने के लिए टूट पड़ते थे। उस समय यदि ये चाहते तो अपने ख्यालों के माध्यम से लाखों की सम्पति जुटा सकते थे मगर ये अपने स्वयं के लिये किसी प्रकार की कोई मांग न कर सार्वजनिक रूप से बाग लगवाने, प्याऊ चलाने तथा धर्मशाला बनवाने को कहते थे जिसकी लोग सहर्ष पालना करते थे। भुरीलालजी नृत्य में जितने कमाल थे उतने ही संगीत के भी विख्यात थे। डीग के बुजुर्ग लोगों के कानों में आज भी उनके संगीत की स्वरलहरियां झंकृत हो उठती हैं।

भुरीलालजी का स्मरण होते ही ये लोग जमीन की माटी अपने सर पर लगाकर श्रद्धानत हो उठते हैं। डीग का प्रत्येक कण-कण उनकी स्वर लहरी में अगापगा है। वे संगीत के तानसेन थे। अपने खेल में एक बार नहीं, कई बार भुरीलालजी ने अपनी धूलिया मल्हार तथा मेघ मल्हार से आंधी और बरसात को बुलाकर संगीत के प्रति अपनी अटूट साधना, गहन तन्मयता तथा संपूर्ण भक्ति का परिचय दिया। उनके जीवन का चरम लक्ष्य ही संगीत था। अपनी अनूठी सूझबूझ एवं अद्भुत कलाचातुर्य से उन्होंने सांगीत और संगीत को एकमेक कर दिया था। वे अक्सर कहा करते थे--

सदा संगीत विद्या में लगा रहता है मेरा मन।
इसी मिश्री के रस में ही पगा रहता है मेरा मन।
कहीं से सूचना मुझको यदि मिल जाय सांगीत की
तो निश्छल नाच गाने को भगा रहता है मेरा मन ॥

भुरीलालजी अच्छे वादक तथा ख्याल लेखक भी थे। इनका लिखा गया मजमून नामक ख्याल अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। डीग की रामलीला की भी ये रीढ़ थे।

नौटंकी ख्याल लेखकों में नत्थाराम ने सर्वाधिक प्रसिद्धि पाई। इन ख्यालों को पेशेवर बनाने का श्रेय भी उन्हीं को है। उन्होंने अपनी स्वयं की नौटंकी मण्डली भी प्रारम्भ की। भरतपुर की सुप्रसिद्ध गिरिराज संगीत मंडली के संचालक गिरिराज नत्थारामजी के प्रमुख शिष्य-खिलाड़ी थे। नत्थाराम ने लगभग 35 ख्यालों की रचना की। नौटंकी को इतना लोकप्रिय बनाने वाले भी उन्हीं के ये ख्याल ही हैं। इन ख्यालों का इतना जबर्दस्त प्रचार हुआ कि कई व्यक्ति अपने घर-धंधे छोड़ नौटकियां नाचने लग गये। मध्यप्रदेश में जितनी प्रसिद्धि माच ने पाई उतनी ही प्रसिद्धि इधर नौटंकियों की भी है।

भरतपुर जिले में नौटंकियों की भरमार है। इधर का तो सारा क्षेत्र ही नौटंकीमय लगा। कामा, धौलपुर, बसेड़ी, धौर, बाड़ी, बांसी, पहाड़पुर, ताखा, रूपवास, मोरेखा, खेड़ी, रोजड़ी, आकोरा, खुड़डाणा तो इन ख्यालों के खास अखाड़े हैं जहां आज भी कई मण्डलियां कार्यरत हैं। इधर प्रत्येक बारात में नौटंकी ले जाने की परम्परा-सी पड़ गई है। जिस बारात में नौटंकी दल नहीं वह बारात ही बासी तथा हेय समझी जाती है। कभी-कभी तो ऐसी बारात को नामर्द बारात कह कर उसकी खिल्लियां तक उड़ाई जाती हैं।

नौटकी में बेहरे तबील, दोहा, बेहरे शिकस्त, लावणी सादी, लावणी लंगड़ी, जी की लावणी, कड़ा दबोला, चौबोला, कव्वाली, गजल, दादरा तथा ठुमरी छन्दों की प्रधानता रहती है। वादकों में इधर करीम मुजावीर तथा नजीर (ढोलक) सूका मिरासी (नक्काड़ा) रहीम बक्स (ढपली) हैदर, सुन्दर तथा मल्लू (सारंगी) मोला सदका (चिकारा) के नाम उल्लेखनीय हैं।

नौटंकियों के ख्यालों की भांति नौटंकियों के स्वांग भी होते हैं। ये स्वांग अधिकतर चमार तथा डोम लोग भरते हैं। विवाह शादियों में ये लोग अपने स्वाँग कौतुक प्रदर्शित कर नेग प्राप्त करते हैं। ढोलक तथा नक्काड़े इन स्वांगों के प्रिय वाद्य होते हैं। संगीत, नृत्य, अभिनय, वाद्य आदि की दृष्टि से ये स्वांग नौटंकी रंगत लिये होते हैं इसलिए इन्हें नौटंकी स्वांग नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

इधर के नौटंकी दलों में धौलपुर की निरंजन की 'निरंजन नौटंकी' प्रसिद्ध है। इसमें अंगूरीबाई बड़ी प्रसिद्ध कलानेत्री रही है। इस नौटंकी में पहले रासलीला की जाती थी। धौर की छिदुराम शर्मा की नौटंकी ग्राम्य मनोरंजन की दृष्टि से बड़ी सफल मानी जाती है। बाड़ी की शुकल शर्मा की नौटंकी भी ग्राम्यजीवन का स्वस्थ मनोरंजन कर रही है।

इसमें परदे भी काम में लिये जाते हैं। बसेड़ी में दुर्गाप्रसाद शर्मा ने अपने गुरु नबीबक्स के नाम से नौटंकी प्रारंभ की। बड़रिया की नौटंकी बारात आदि के लिये मानी हुई है। ताखा में कुंजी की अत्यन्त प्रसिद्ध नौटंकी है। इसी प्रकार बांसी की खूबीराम की, मोरेखां की जारिया की, रूपवास की बद्री की तथा खेड़ी की रामलाल चिरंजीलाल की नौटंकियां प्रदर्शनरत हैं।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।